अभ्युदय

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

परिपत्र

वर्ष - 13 अंक - 08/09 नवम्बर-दिसम्बर 2013

गुरु वाणी

★ आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर प्रस्तुत विनयांजलि

- ईसा की बीसवीं सदी में भारत में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया, उनमें एक हैं आचार्य तुलसी। उन्होंने जीवन के बारहवें वर्ष में परमपूज्य कालूगणी के पास मुनित्व स्वीकार किया। उन्होंने अपनी प्रतिभा और साधना के आधार पर परमपूज्य कालूगणी के हृदय में अपना स्थान बनाया और पूज्य कालूगणी ने उन्हें अपने हृदय में बसाया, ऐसा हमारा अनुमान है। वे छोटी अवस्था में एक उभरते मुनि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। वे छोटी अवस्था में ही शिक्षक बन गए और लंबे काल तक शिक्षक बने रहे।
- बाईस वर्ष की अवस्था में वे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशास्ता बन गए। तेरापंथ के नवम आचार्य के रूप में उन्होंने अपना शासनकाल प्रारंभ किया। बाईस वर्ष जैसी छोटी अवस्था में अपने सैंकड़ों साधु-साध्वियों के विशाल समुदाय का एकछत्र आचार्य बनना तेरापंथ के लिए तो कीर्तिमान है ही, अन्य जैन सम्प्रदायों की दृष्टि से भी यह एक विशिष्ट घटना प्रतीत हो रही है। उन्होंने प्रलम्ब आचार्यकाल प्राप्त किया, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने जीवनकाल में एक साथ इकतीस मुनि दीक्षाएं दीं, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने आचार्यकाल में अपनी संसारपक्षीया मां को अपने मुखकमल से दीक्षित किया, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने एक साथ चौदह पुरुषों को मुनिदीक्षा प्रदान की, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उनके आचार्यकाल में दो आचार्यों की माताओं-परमपूज्य कालूगणी की संसारपक्षीया मां महासती छोगांजी और परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की संसारपक्षीया मां महासती वदनाजी का संगम हुआ, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने सुदूर पूर्वांचल और दक्षिणांचल आदि क्षेत्रों की पदयात्रा की, यह भी तेरापंथ के आचार्यों के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने आचार्यकाल में धर्मसंघ में क्रमशः तीन साध्वीप्रमुखाओं की नियुक्ति की, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने दीक्षा-प्रदाता गुरु द्वारा दीक्षित शिष्य को अपना उत्तराधिकारी बनाया, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने आचार्यकाल में जितनी मुनि दीक्षाएं दीं, वह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
  - उन्होंने अपने जीवनकाल में आचार्य पद का परित्याग कर अपने युवाचार्य को आचार्य बना दिया, यह भी तेरापंथ के इतिहास में कीर्तिमान है।
- इन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि आचार्य तुलसी एक कीर्तिमान पुरुष थे। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का संप्रवर्तन किया। उनके आचार्यकाल में प्रेक्षाध्यान पद्धति का आविर्भाव हुआ। शिक्षा जगत के लिए उनके शासनकाल में जीवनविज्ञान का प्रकल्प प्रस्तुत हुआ। ये तीनों अवदान लोक-कल्याणकारी उपक्रम हैं। गुरुदेव के कार्यक्रमों को व्यापकता प्रदान करने वाले उन्मेष हैं।
- परमपूज्यश्री का एक महत्वपूर्ण अवदान है जैन आगमों का सम्पादन। उनके आचार्यकाल में उन्हीं के वाचनाप्रमुखत्व में जैन आगमों के सम्पादन का कार्य प्रारंभ हुआ। कार्य की निष्पत्ति कुछ अंशों में उन्होंने स्वयं देख भी ली थी। अनेक आगम सुसम्पादित होकर उनकी विद्यमानता में प्रकाशित हो गए। आगम अनुसंधान का कार्य तेरापथ धर्मसंघ द्वारा वर्तमान में भी किया जा रहा है। अवशेष कार्य को निःशेष करने की दिशा में प्रयास चालू है।
- दीक्षा से पूर्व शिक्षा की आवश्यकता को गुरुदेव ने अनुभव किया। उसकी फलश्रुति है पारमार्थिक शिक्षण संस्था। उन्होंने समणश्रेणी का सूत्रपात किया। यह भी उनका साहसिक कदम था। इस श्रेणी ने प्रतिष्ठा प्राप्त करने के साथ अपनी उपयोगिता भी प्रमाणित की है।

- गुरुदेव के आचार्यकाल में जैन विश्वभारती संस्था प्रादुर्भूत हुई। आज यह संस्था मेरी दृष्टि में जैन समाज में स्वनामधन्य संस्था है। इसी संस्था के सुपुत्र के रूप में जैन विश्वभारती इंस्टीट्यूट (मान्य विश्वविद्यालय) का जन्म हुआ, जिसे परमपूज्य गुरुदेव का वरदहस्त प्राप्त हुआ। वे इसके संवैधानिक रूप में अनुशास्ता बने। मेरी दृष्टि में प्रस्तुत मान्य विश्वविद्यालय जैन समाज के लिए बड़ी उपलब्धि है।
- गुरुदेव के आचार्यकाल में नारी-जागरणा का अपूर्व कार्य हुआ। वह कार्य आज भी निष्पत्ति के रूप में समाज के सामने है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल उसका साक्ष्य है। युवावर्ग के उत्थान के लिए गुरुदेव के आचार्यकाल में चिरस्मरणीय आयाम उद्घाटित हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के रूप में उसका दर्शन किया जा सकता है।
  अणुव्रत आन्दोलन को गतिशील बनाए रखने के लिए अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्वभारती और अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास की स्थापना हुई। गुरुदेव की विद्यमानता में तेरापंथ विकास परिषद, जय तुलसी फाउण्डेशन, प्रेक्षा विश्वभारती, अमृतवाणी जैसे उपक्रम विकसित हुए। तेरापंथी सभाओं की एक लम्बी शृंखला प्रस्तुत हो गई।
- एक महान् व्यक्तित्व की जन्मशताब्दी का 100वां वर्ष वि.सं. 2070, कार्तिक शुक्ला द्वितीया को प्रारंभ होने जा रहा है। परमपूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञजी की सन्निधि में शताब्दी समारोह की योजना बननी शुरू हो गई थी। वह योजना अब निर्णीत हो चुकी है। उसकी क्रियान्विति भी संपन्नता की प्रक्रिया में है। शताब्दी वर्ष को व्यक्तित्व-निर्माण वर्ष के रूप में घोषित किया गया है। व्यक्तित्व-निर्माण की दो मुख्य योजनाएं हैं-
  1. महाव्रत - 100 महाव्रती दीक्षाएं देना।
  2. अणुव्रत - अणुव्रती बनाना और अणुव्रत का प्रचार-प्रसार करना।
- परमश्रद्धेय, परोपकारपरायण, परमदयालु, महान् अनुशास्ता, परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का जन्मशताब्दी वर्ष हम सबके लिए नि:श्रेयस् का निमित्त बने। शुभाशंसा।

- आचार्य महाश्रमण

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष का प्रथम चरण. . .

आचार्यश्री महाश्रमण की सरगम पर तरंगित हो उठा

सुगुरु को वंदन शत-शत बार।

तुलसी जन्म शताब्दी पावन पर्व परम सुखकार।।
भैक्षव शासन को प्रभुवर ने दी अभिनव ऊंचाई।
दिया नया आकाश प्रगति का चिन्तन की गहराई।
लम्बी-लम्बी यात्राओं का खोला गण में द्वार।।१।।
जैन आगमों का सम्पादन, नव इतिहास बनाया।
पावन पवन प्रेरणा का पा, श्रुतसागर लहराया।
एकनिष्ठ हो भरा आर्य ने जिन-वाणी भण्डार।।२।।
मुनि दीक्षा का शतक बने, यह ऊंचा लक्ष्य हमारा।
संघ-संपदा वर्धमान हो, पाकर नया उजारा।
संस्कारों के महासृजन का सपना हो साकार।।३।।
अमल अणुव्रत आन्दोलन अवदान बने वरदायी।
जनजीवन में बिम्बित हो मानवता की परछाई।
नैतिकता की सुरसरिता से सरसाए संसार।।४।।
युगप्रधान युगद्रष्टा प्रभु को श्रद्धासुमन चढ़ाएं।
शुभ भविष्य को सम्मुख रखकर आगे कदम बढ़ाएं।
'महाश्रमण' जीवन निर्माता तुलसी का उपकार।।५।।

लय :- यही है जीने का विज्ञान....।

गुरु वाणी

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का उत्तंग घोष

'जन जन में जागे विश्वास – संयम से व्यक्तित्व विकास'

- हमारा मानना है कि व्यक्तित्व-निर्माण का एक महत्वपूर्ण घटक तत्त्व है संयम। इसलिए इसके अनुरूप ही हमने शताब्दी वर्ष का घोष भी चयनित किया है 'जन जन में जागे विश्वास : संयम से व्यक्तित्व विकास'। हमारा यह विश्वास है कि संयम के द्वारा अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है।

– आचार्य महाश्रमण

'व्यक्तित्व निर्माण वर्ष' के रूप में प्रतिष्ठापित – आचार्य तुलसी का जन्म शताब्दी वर्ष

इस वर्ष को परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के द्वारा 'व्यक्तित्व निर्माण वर्ष' के रूप में निर्धारित किया गया। व्यक्तित्वों का निमार्ण बहुत आवश्यक है। आचार्य तुलसी ने कितने-कितने व्यक्तित्वों का निर्माण किया था। वे निर्माता पुरुष थे, इसलिए उनके जन्म शताब्दी वर्ष को व्यक्तित्व निर्माण वर्ष के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। हमने चिंतन किया था कि गुरुदेव के शताब्दी वर्ष में महाव्रती व्यक्तित्वों का निर्माण हो। इसके लिए सौ मुनि दीक्षाओं का लक्ष्य निर्धारित किया। उस दिशा में प्रयास भी चल रहा है। इसके साथ हमने दूसरा मुख्य कार्यक्रम हाथ में लिया है, अणुव्रत के प्रचार-प्रसार का, लोगों को अणुव्रती बनाने का।

– आचार्य महाश्रमण

अनमोल प्रेरणा – आचार्य महाश्रमण

- **मीठा बोलना यथार्थ बोलना** – व्यक्ति अपनी भाषा से अच्छे से अच्छों का मन जीत सकता है एवं कठिन से कठिन काम भी आसानी से कर सकते हैं। ज्यादा बोलने से बना हुआ काम बिगाड़ सकते हैं। आचार्यश्री ने शिविरार्थियों को मीठा बोलना एवं सथार्थ बोलने का संकल्प कराया।

- **संस्कारों की संपदा बहुत बड़ी होती है** – संस्कारों की संपदा बहुत बड़ी होती है। इसके सामने धन, पद और सत्ता की संपदा बहुत छोटी होती है। बच्चों में संस्कार ज्यादा से ज्यादा हो यह आज की आवश्यकता है। अहिंसा, मैत्री, नैतिकता आदि ऐसे अनेक माध्यम हैं जिसके प्रयोग से संस्कारों का निर्माण होता है। आध्यात्मिकता, ज्ञानार्जन करने का महत्वपूर्ण उपक्रम है। बच्चों में संस्कार निर्माण शिविर का निरंतर प्रयास करते रहना चाहिये। गुरु हमेशा ज्ञानदाता, संस्कारदाता, संयमदाता एवं अनुशासनदाता होते हैं।

- **संस्कारी होने का प्रथम परिचय वाणी का सदुपयोग** – बोलने के साथ न बोलने की कला भी व्यक्तित्व विकास में सहायक बन सकती है। संस्कार निर्माण शिविर के माध्यम से बालक खुद के, परिवार के, धर्मसंघ के एवं राष्ट्र के सुदृढ़ विकास में सहायक बन सकते हैं। विषम परिस्थितियों एवं प्रलोभन से दूर रहकर अपने संस्कारों को न भूलना ही संस्कारी होने की पहचान है। कठिन काम भी आसानी से कर सकते हैं। ज्यादा बोलने से बना हुआ काम बिगाड़ सकते हैं। आचार्यश्री ने शिविरार्थियों को मीठा बोलना एवं सथार्थ बोलने का संकल्प कराया।

अध्यक्षीय

नव वर्ष हम सभी के लिये मंगलकारी, अध्यात्ममयी, विकासोन्मुख व उज्ज्वलता से ओत:प्रोत: हो यह शुभ भावना है।

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के लाडनूं में प्रथम चरण के साप्ताहिक कार्यक्रम, बीदासर में दीक्षा महोत्सव का महाचरण, सरदारशहर में आचार्य श्री महाश्रमणजी के अमृत महोत्सव का छठा चरण, आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की निर्वाण स्थली में निर्मित अध्यात्म का शान्तिपीठ लोकार्पण समारोह अमृत पुरुष आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में बहुत ही गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुये। आगामी 30 जनवरी से 5 फरवरी तक आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का द्वितीय चरण, मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा की 100वीं वार्षिक साधारण सभा (5 फरवरी) आचार्य तुलसी की निर्वाण स्थली शक्तिपीठ, गंगाशहर में समायोज्य है। ज्यादा से ज्यादा भाई-बहिन इन कार्यक्रमों में प्रत्यक्षत: साक्षी बनकर अपने दायित्व का निर्वहन करेंगे यह विश्वास है।

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में निर्मित कैलेण्डर प्रत्येक तेरापंथी परिवार में पहुंचे यह निर्धारण किया गया उसी अनुसार प्रत्येक सभा में प्राप्त सूचि के आधार पर कैलेण्डर संप्रेषित किये गये। मुझे पूरा विश्वास है कि सभी सभाओं के पदाधिकारियों ने अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए कैलेण्डर प्रत्येक परिवार तक पहुंचा दिये होंगे, अगर किसी कारण से अभी तक परिवारों को कैलेण्डर नहीं पहुंचाये गये हैं तो सभी सभाओं के प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि मर्यादा महोत्सव से पहले-पहले यह कैलेण्डर प्रत्येक परिवार में पहुंचाने का श्रम करावें व उसकी रिपोर्ट मर्यादा महोत्सव तक कार्यालय में अवश्य ही प्रेषित करावें। अगर किसी सभा को कैलेण्डर प्राप्त नहीं हुए हैं तो सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से प्राप्त कर ले जिसकी सूचि इसी 'अभ्युदय' में अंकित है।

- उत्तरांचल, पूर्वांचल, पश्चिमांचल व दक्षिणांचल अणुव्रत संकल्प यात्रायें आचार्य श्री महाश्रमणजी की कृपा दृष्टि से समणीवृन्द के आध्यात्मिक निर्देशन में आंचलिक संयोजकों की सहभागिता से व स्थानीय कार्यकर्ताओं की सतत् कार्य निष्ठा से अनवरत गतिमान है। तेरापंथ धर्मसंघ का प्रत्येक भाई-बहिन ही नहीं वरन जन-जन इस अणुव्रत संकल्प यात्रा में सहभागी बने व इसके उद्देश्य की संपूर्ति में योगभूत बने तो हमें आचार्य तुलसी के प्रति भावाञ्जलि अर्पित करने का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके क्षेत्र में अणुव्रत संकल्प यात्रा प्रभावी होगी।

- जिन-जिन श्रावक व श्राविकाओं को परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी के श्रीमुख से सम्बोधन अलंकरण प्राप्त हुये हैं उनके सम्मान में आगामी 2 फरवरी 2014 को दोपहर 3.00 बजे गंगाशहर में मिलन संगोष्ठी महासभा की तरफ से समायोज्य है, इस अवसर पर सम्बोधन अलंकरण प्राप्त श्रावक-श्राविकायें उपस्थित होकर हमें आतिथ्य का सुअवसर प्रदान करेंगे यह विश्वास है।

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के स्वागत समिति के सम्माननीय सदस्य प्रत्येक चरण के आधार स्तम्भ है। उनका सम्मान करना समिति का नैतिक दायित्व है। आगामी 3 फरवरी 2014 को सायं 7.00 बजे आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के स्वागत समिति के सदस्यों का सम्मान कर समिति गौरवान्वित होगी, मुझे पूरा विश्वास है कि सभी स्वागत समिति सदस्य गंगाशहर में उपस्थित होकर यह सौभाग्य हमें प्रदान करेंगे।

- सन् 2013, तेरापंथ धर्मसंघ के विकास का अमिट हस्ताक्षर बना है। महासभा शताब्दी वर्ष, आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का शुभारम्भ, बीदासर का ऐतिहासिक दीक्षा महोत्सव जैसे गरिमामय कार्यक्रमों ने धर्मसंघ को उज्ज्वलता प्रदान की है। तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में साधु-साध्वियों की संख्या में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है वह आलोच्य वर्ष की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। नव वर्ष में हम संकल्प ग्रहण करें कि तेरापंथ धर्मसंघ के विकास में आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में हम हर पल सहभागी बनकर संघ व संघपति के प्रति श्रद्धा आस्था व समर्पण की त्रिवेणी में आत्मसात् रहेंगे।

इसी आशा एवं विश्वास के साथ. . .

- हीरालाल मालू

सम्पादकीय

तुम अटल संकल्प निश्चय और साहस, हर असंभव को बना संभव दिखाते
तुम परम पुरुषार्थ की साकार प्रतिमा, गीत सृजन के सरस सबको सिखाते
कर विजय यात्रा विलक्षण लहर लाये, यश विपुल कीर्तिमानों का ढ़हेगा

- गुरु तुलसी के अलख अगोचर माहात्म्य की अन्त: स्वीकृति के साथ उन्हीं की अनमोल कृति श्रद्धेया महाश्रमणीजी की उपरोक्त पंक्तियों में छिपा सत्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के रूप में नवीन आकार के साथ विस्तार ले रहा है।

- एक ओर जहां तुलसी-तुलसी-तुलसी की आरोग्यता में, उनकी सर्वव्यापकता में आज समूचा विश्व 'आरोग्ग बोधि' का लाभ लेकर व्यक्तित्व विकास की ऊंचाईयों का स्पर्श करने को आतुर दिखायी दे रहा है, वहीं जीवन की उर्ध्वगामी यात्रा को समर्पित आचार्य श्री महाश्रमणजी का एक-एक कदम केलवा की अंधेरी ओरी के अभियान पर गणाधिपति तुलसी की महिमा को और अधिक गरिमा के साथ अभिमण्डित कर रहा है।

- कहाँ मिलते हैं ऐसे शिष्य जो अपने आराध्य में, अपने स्तुत्य में एक रूप होकर अवस्थित होते हैं? और अपनी निर्मल भाव धारा से कल्याण वर्षा करते हुये साधना की सिद्धि से साक्षात्कार करते हैं। ऐसे स्तोता के संकल्प की संपूर्ति में पूरी कायनात सक्रिय हो उठती है। जिसका प्रत्यक्ष नजारा हम सब अपने धर्म संघ में देख रहे हैं।

- धन्य है वह संघ, धन्य है वह सद्यस्क आस्था जो स्तोता को हर नजर में स्तुत्य बना दे। गुरु और शिष्य दोनों का माहात्म्य बढ़ा दे।

- सौभागी हैं हम कि हम सबको आचार्य महाश्रमण के रूप में 'जीवन्त तीर्थ' के दर्शन कर अपने जीवन को सार्थक बनाने का शुभ संयोग मिला है। हमने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के प्रथम चरण का भव्य समारोह देखा और देखा इसके 'महाचरण' का विहंगम दृश्य। मोक्ष मार्ग पर बढ़ती शुभेच्छा पर अनगिन नयनों से बरसते श्रद्धा नीर अनिर्वचनीय पुलकन से भर रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो इस कलियुग में भी तीर्थंकर के समवसरण में देशना सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो गया हो।

- दूसरी ओर सामाजिक स्वस्थता को प्रशस्त करती 'अणुव्रत रथ यात्राओं' की पूरे देश में धूम है। अणुव्रत का मंत्र हर तंत्र को चमत्कृत कर रहा है। मानो एक नई क्रान्ति का अध्याय लिखा जा रहा हो। महासभा के साथ-साथ तेरापंथी संस्थाओं का एवं क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं का अहर्निश श्रम नि:स्वार्थ भाव से परिवर्तन व उन्नयन की एक नई इबारत गढ़ रहा है।

- प्राप्त रिपोर्टों को पढ़कर अकसर गर्वानुभूति से भर उठती हूँ और चाहती हूँ कि वर्ष 2014 में भी सत्य संस्कृति एवं संस्कार के संधान पर अमृत पुरुष आचार्य श्री महाश्रमणजी का अगम्य आह्वान शत गुना फलवान होकर संघ ही नहीं अपितु पूरी मानवता को मानव होने के अभिनव ललाम से भर दे। तब... हर हृदयांगन में तुलसी पुष्पित होकर सचमुच खिल उठेगा। फिर... उसकी अभ्यर्थना में पौरुष दीप जलाने के शुभ संकल्पों में हम देर क्यों लगाये? अंतर का विश्वास महाश्रमणीजी के शब्दों में गुनगुना रहा है...

क्रान्ति का अध्याय जो तुमने लिखा है, वह समय के भाल पर अंकित रहेगा
शान्ति का दरिया तुम्हारे चित्त में जो, वह जमाने की धरा पर अब बहेगा

शुभ भावों के साथ
वीणा बैद

आचार्य तुलसी ने तेरापंथ को मेरापंथ बना दिया।
- विवेक व्यास, तहसीलदार पचपदरा

★ **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का श्रद्धामय वातावरण में भव्य शुभारम्भ :**
शुभ भविष्य को सम्मुख रखकर, आगे कदम बढ़ायें,
'महाश्रमण' जीवन निर्माता - तुलसी का उपकार है. . .

- आज परमपूज्य, परम श्रद्धेय, परम कृपालु, परम उपकारी परम उपकारपरायण आचार्य तुलसी की जन्म शताब्दी वर्ष का प्रारंभ हुआ है। कार्तिक शुक्ला द्वितीया 'अणुव्रत दिवस' के रूप में भी प्रतिष्ठित है किन्तु इस बार इस तिथि से लेकर अगली कार्तिक शुक्ला द्वितीया तक पूरा वर्ष हमने जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाना सुनिश्चित किया है, निर्धारित किया है। आज उसका शुभारंभ हुआ है। यह भी एक सुयोग ही कहें कि जहां उनका जन्म हुआ, वहीं उनकी शताब्दी का शुभारंभ हो रहा है।
- लाडनूं इस बात के लिए गौरवान्वित है कि उसकी भूमि पर आचार्य तुलसी जैसे महापुरुष ने जन्म लिया। वे लाडनूं के खटेड़ वंश में पैदा हुए थे। मैं श्री झूमरमल खटेड़ और मातुश्री वदनाजी की स्मृति करता हूं, जिन्होंने उस रत्न को जन्म दिया। स्थूल भाषा में कहा जा सकता है कि तेरापंथ शासन लाडनूं नगर और यहां के खटेड़ वंश का आभारी है, जिसने ऐसा महान व्यक्तित्व तेरापंथ को दिया। वे क्षेत्र और वे मां-बाप कृतार्थ होते हैं, जहां और जिनके द्वारा किसी महापुरुष का जन्म होता है।
- आज कार्तिक शुक्ला द्वितीया के दिन जैविभा के इस परिसर में जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम का शुभारंभ हो रहा है। पूरे वर्ष में आत्मकल्याण और परकल्याण के लिए ऐसे उपक्रम चलते रहने चाहिए। हमारा सारा कार्य एक लक्ष्य के साथ हो और कल्याणपरक हो। हमारे साधु-साध्वियां समण समणियां और श्रावक-श्राविका समाज खूब अच्छे ढंग से इस वर्ष को मनाने का प्रयास करे, यह हमारी कामना है।

- संघ अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण

संवाद

- जैन परम्परा के जाज्वल्यमान नक्षत्र, तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता, विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कारों व सम्मानों से विभूषित, जन-जन की आस्था के आस्थान युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी का 100वां जन्मदिवस। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ का महनीय प्रसंग। जनाकीर्ण सुधर्मा सभा में प्रातः लगभग 6.46 बजे साधु-साध्वियों, समणियों व श्रद्धालुओं की समवेत उपस्थिति। शताब्दी समारोह के मार्गदर्शक व तुलसी की प्रतिकृति परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण ने अपनी धीर-गंभीर वाणी में 'दणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं...' से कार्यक्रम का शुभारंभ किया।
- पूज्यप्रवर ने खड़े होकर अपने गुरु को विनयांजलि समर्पित की। विनयांजलि समर्पण के पश्चात् आचार्यप्रवर ने शताब्दी वर्ष के संदर्भ में विशेष रूप से रचित गीत 'सुगुरु को वदंन शत-शत बार' का संगान किया। शताब्दी के निर्णीत घोष 'जन-जन में जागे विश्वास : संयम से व्यक्तित्व विकास' का गुरु के श्रीमुख से ओजपूर्ण उद्घोष हुआ।
- मध्यान्ह में लगभग 12.15 बजे जैविभा परिसर में स्थित विमल विद्या विहार के विशाल प्रांगण में निर्मित पण्डाल में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के प्रथम चरण के कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। शताब्दी घोष व इस उपलक्ष्य में आचार्यवर द्वारा विशेष रूप से रचित गीत के संगान के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। घोष का समुच्चारण व गीत का संगान मुनि महावीरकुमारजी ने किया। **आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह के संयोजक श्री हीरालाल मालू ने समागत अतिथियों व समुपस्थित जनता का स्वागत किया।**
- जैविभा के अध्यक्ष श्री ताराचन्द रामपुरिया एवं प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र घोषल ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। खटेड़ परिवार ने अपने कुलभूषण की अभयर्थना में समूहगीत प्रस्तुत किया। मुनिवृन्द, साध्वीवृन्द व समणीवृन्द ने पृथक्-पृथक भावपूर्ण गीतों का संगान किया। शासनगौरव साध्वी राजीमतीजी ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य के साथ साध्वियों द्वारा शताब्दी वर्ष के लिए स्वीकृत संकल्पों की विस्तृत सूचि पूज्यचरणों में प्रस्तुत की।

माननीय पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक **'Living With A Purpose'** में जिन 14 विश्व विख्यात व्यक्तित्वों के बारे में लिखा उनमें एक हैं 'आचार्य श्री तुलसी'। यह अतिशय गौरव की बात है। उन्हीं का 100वां जन्मदिन हम सबके लिये मंगलमय हों।

- सेदेहुरै सामी, महापौर चैन्नई

- महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी ने आचार्य तुलसी के गौरवमयी व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव, भाजपा युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और बीसीसीआई के संयुक्त सचिव श्री अनुराग ठाकुर, संसदीय कार्य एवं आयोजना राज्य मंत्री श्री राजीव शुक्ला, केन्द्रीय कारपोरेट अफेयर्स राज्य मंत्री श्री राजेश पायलट, आर्म्ड फोर्स ट्रिब्युनल के चेयरमैन न्यायमूर्ति श्री प्रकाश टांटिया ने आचार्य तुलसी के महत्वपूर्ण अवदानों को प्रस्तुत कर गौरवानुभूति की।
- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने उपस्थित विशाल जन समूह को आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त से परिचय करवाया। समागत अतिथियों को महासभा के अध्यक्ष सहित उसके पदाधिकारियों ने साहित्य व मोमेन्टो से सम्मानित किया। अमृतवाणी द्वारा आचार्य तुलसी के चयनित प्रवचन अंश एलईडी पर प्रदर्शित किए गए। कार्यक्रम का सशक्त समयबद्ध संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।
- रात्रि में आचार्यवर की सन्निधि में आयोजित आंशिक धम्मजागरणा कार्यक्रम का समायोजन किया गया।
- **ज्ञातव्य है कि आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उद्घाटन कार्यक्रम की सप्तदिवसीय रूप रेखा पूर्व निर्धारित विषयों पर समायोजित थी जिसका विवरण इस प्रकार है :-**

5 नवम्बर	शुभारम्भ
6 नवम्बर	आचार्य तुलसी : साहित्य साधना
7 नवम्बर	आचार्य तुलसी : क्रान्त विचार
8 नवम्बर	आचार्य तुलसी : प्रबंधन कौशल
9 नवम्बर	आचार्य तुलसी : सुदीर्घ यात्रायें
10 नवम्बर	आचार्य तुलसी : निर्माण कौशल
11 नवम्बर	आचार्य तुलसी : जीवन गौरव गाथा

- आचार्य तुलसी के बहु आयामी व्यक्तित्व को उपरोक्त विषयों में संकलित करने का लघु प्रयास किया गया है हालांकि उस महामानव के महान् व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने में दुनिया का हर शब्द कोष अपूर्ण है किन्तु फिर भी इन विषयों के माध्यम से विराट व्यक्तित्व की विराटता का बोध पाठ हर साधक आराधक को नई ऊर्जा से अनुप्राणित करता है जिसका राष्ट्रव्यापी प्रभाव दृष्टव्य एवं श्रव्य है।

★ अणुव्रत संकल्प यात्रा - प्रारूप

- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष की महत्वपूर्ण परियोजना '**अणुव्रत संकल्प यात्रा**' अपनी निर्धारित तिथि पर अपने निर्धारित क्षेत्रों से प्रारम्भ हो चुकी है। इन रथों में निम्नलिखित समणीवृन्द का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है :-
  1. लाडनूं (5 नवम्बर 2013) - समणी निर्वाणप्रज्ञाजी, समणी मध्यस्थप्रज्ञाजी
  2. मुम्बई (10 नवम्बर 2013) - समणी शारदाप्रज्ञाजी, समणी रतनप्रज्ञाजी
  3. कोलकाता (24 नवम्बर 2013) - समणी ज्योतिप्रज्ञाजी, समणी मानसप्रज्ञाजी
  4. बेंगलोर (1 दिसम्बर 2013) - समणी कंचनप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी
- समणीवृन्द के साथ इन रथों में अणुव्रत समिति के दो सदस्य अनिवार्य रूप से रथों में उपस्थित रहें ऐसा प्रयास है। सम्बन्धित संस्थायें जागरूकता के साथ सक्रिय हैं। इसकी प्रगति की जानकारी महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू व अणुव्रत संकल्प यात्रा के संयोजक श्री संजय खटेड़ को करायी जा सकती है।

★ नौगांव की भूमि बनी - अणुव्रत संकल्प यात्रा के चार अत्याधुनिक रथों की निर्माण स्थली

आचार्य तुलसी सत्य की शोध, अन्वेषण और अनुसंधान में निरंतर लगे रहे, इसलिए रूढ़िवादी और उपयोगिता शून्य परम्परावाद उन्हें कभी अभिसिक्त नहीं था और अपने संदेश से उन्होंने दुनिया में अहिंसा से शान्ति स्थापित करने का प्रयास किया। उसी उद्देश्य

हम हाइटेक युग में जी रहे हैं लेकिन रूढ़ि उन्मूलन की बात आती है
तो हम पीछे हट जाते हैं। आचार्य श्री ने अनेक पुरानी रूढ़ियों को तिलांजलि दिलवाई।
नारी जगत का सर्वांगीण उत्थान किया। ऐसे महान् गुरु को मैं प्रणाम करती हूँ।
- भानु बहिन पटेल, लायंस डिस्ट्रीक्ट गवर्नर व सुप्रसिद्ध गायनेकोलोजिस्ट

और भावना को आगे बढ़ाते हुये नौगांव में 'अणुव्रत संकल्प यात्रा' के चार रथों का निर्माण कार्य महासभा के निर्देशन में सानन्द सम्पन्न हुआ। इन रथों को पूरे देश की यात्रा हेतु गंतव्य स्थान के लिये प्रस्थित करते हुये नौगांव की जनता में गौरव मिश्रित उत्साह अपने चरम पर था।

- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ सभा भवन में इन रथों के प्रस्थान के अवसर पर आयोजित धार्मिक आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में वन और पंचायत राज्य मंत्री श्री रकिबुल हुसैन, नौगांव जिला उपायुक्त डॉ. अशोक बाबू और नौगांव जिला पुलिस अधीक्षक श्री विवेक राज सिंह उपस्थित थे।
- मुख्य अतिथि श्री रकिबुल हुसैन ने हिंदी में अपने संबोधन के दौरान कहा कि हम राजनीतिक जीवन में बहुत सी सभाओं में शिरकत करते हैं लेकिन कुछ जगह ऐसी होती है कि जहां से दिन की शुरूआत अच्छी होती है, कुछ सीखने को मिलता है। उन्होंने आचार्य तुलसी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनको महान् महापुरुष की संज्ञा दी।
- जिला उपायुक्त डॉ. अशोक बाबू ने कहा कि आचार्य तुलसी लोगों में अहिंसा के संदेश को उजागर करते हुए मानव जाति के मार्गदर्शक बन गये।
- इस अवसर पर नौगांव में धर्म का संदेश देने पहुंची समणी निर्देशिका कंचनप्रज्ञाजी ने आचार्य तुलसी को युगपुरुष की संज्ञा दी एवं विधिवत नवकार महामंत्र स्मरण कर रथों को मंगल मंत्र से ऊर्जावान कर गंतव्य की ओर प्रस्थित किया गया।
- ध्यातव्य है कि अणुव्रत संकल्प यात्रा को समर्पित, अणुव्रत आचार संहिता मुद्रित ज्ञान का संदेश देते यह चार रथ नौगांव के समाजसेवी श्री उत्तमचन्द नाहटा के निर्देशन में तैयार किये गये हैं और आज यह देश के चार भागों क्रमशः लाडनूं (राजस्थान), मुम्बई (महाराष्ट्र), कोलकाता (पश्चिम बंगाल), बेंगलोर (कर्नाटक) रवाना कर दिये गये जहां एक भव्य समारोह के बाद इनको जन कल्याण के कार्य में समर्पित कर दिया जायेगा। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के बैनर तले यह रथ नौगांव की एक निजी कम्पनी में तैयार किये गये हैं। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष पर धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये तैयार इस रथ में अत्याधुनिक सुविधायें दी गयी हैं, जिससे इसकी उपयोगिता और अधिक वृद्धिंगत हो जाती है। इसको तैयार करने में करीब छः महीने का वक्त लगा। लीलैंड के मॉडल के चैसिस पर तैयार इसमें इसके उपयोगकर्ता को काफी सुविधा दी गयी हैं। इस रथ को तैयार करने वाले सरदार देवेन्द्रसिंह और सरदार गुरप्रीत सिंह को सभा में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के गणमान्य लोग उपस्थित थे। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री किशोरीलाल कोठारी ने गद्गद् हृदय से अपने आभार मिश्रित भक्ति भरे उद्गार रखे।

उत्तरांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा (राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली)

5 नवम्बर 2013 : संयोजक - श्री अशोक डूंगरवाल

अणुव्रत संजीवन है - जीवन सुरभित चन्दन है।
इतिहास पुरुष तुलसी - तुमसे प्राणों में नव स्पन्दन है।।

- बहुचर्चित 'अणुव्रत संकल्प यात्रा' का मंगल शुभारम्भ आचार्य तुलसी की जन्म भूमि 'लाडनूं' की पावन धरा, जैन विश्व भारती के पवित्र परिसर में तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में 5 नवम्बर 2013 को उत्तर प्रदेश सरकार के युवा मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने हरी झण्डी दिखाकर किया।
- अर्हत् धर्म के प्रकाश एवं संयममय जीवन के विकास हित सतत् जागरूक महापुरुष आर्य महाश्रमण का अणुव्रत संदेश, नव उन्मेष जगाते हुए मंत्र बनकर व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन को सार्थक बनाये इस लक्ष्य से प्रारम्भ 'अणुव्रत संकल्प यात्रा' युग की जलती ज्वाला में शीतल चन्दन सम सुकून के साथ युग चेतना को झकझोरने में मील का पत्थर साबित होगी। ऐसे ही विश्वास के साथ जनवेदिनी की आशा भरी निगाहें मानो कह रही हो. . . हे! तुलसी मुक्ति दूत तुम। भारत सपूत तुम, काटो अब सबके बन्धन...काटो अब सबके बन्धन...

मैंने अणुव्रत संकल्प नियमों की विशेषताओं पर ध्यान दिया और महसूस हुआ कि सामाजिक परिवर्तन हेतु इससे अच्छे एवं सरल नियम और नहीं हो सकते। इसलिये बेंगलोर के किसी एक सर्किल को (अणुव्रत सर्किल) के रूप में नामांकित करने की घोषणा करता हूँ।

- वी. एस. सत्यनारायण, मेयर बीबीएमपी, बेंगलोर

पश्चिमांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा (महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़)

10 नवम्बर 2013 : संयोजक - श्री रमेश सुतरिया

तिमिर का सागर तरने वाले सूर्य का अभिषेक करने
रश्मियां तब भी इठला रही थी, अब भी इठला रहीं है।

- उपशम की साधना में संलीन आचार्य श्री तुलसी का 100वां जन्म शताब्दी वर्ष पूरे देश में अणुव्रत संकल्प के रूप में मनाया जा रहा है इसी के तहत मुम्बई के आजाद मैदान में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मुम्बई के व आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति द्वारा पश्चिमांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ का शुभारम्भ दिनांक 10 नवम्बर 2013, रविवार, प्रात: 10.00 बजे महाराष्ट्र के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा फीता खोलकर गुब्बारे उड़ाकर विशाल जनमेदिनी के मध्य किया गया।
- इस दौरान मुख्यमंत्री श्री पृथ्वीराज चव्हाण ने कहा आचार्य श्री तुलसी रूढ़िवाद के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने राष्ट्र के नैतिक निर्माण का अथक प्रयास किया। उनके कार्यों के प्रति सम्पूर्ण राष्ट्र कृतज्ञता प्रकट करता है पूरे देश में अणुव्रतों से परिवर्तन ला सकते हैं। महाराष्ट्र में पड़े भयंकर सूखे में पशुओं और मानव के लिए पानी के लिए तेरापंथ समाज ने आगे आकर जो सहयोग दिया मैं उसके लिये जैन समाज का आभार प्रकट करना चाहता हूँ। मैं आश्वासन देता हूँ कि आपके समाज के पदाधिकारी हमारे पास आये आचार्य श्री तुलसी के दिये गये अणुव्रत आंदोलन, व्यसनमुक्ति अभियान को सफल बनाने व जन्म शताब्दी को यादगार बनाने के लिए महाराष्ट्र सरकार, भारत सरकार को सहभागी बनाये। समाज परिवर्तन में यह संकल्प यात्रा प्रत्येक राष्ट्र के लिए उपयोगी साबित होगी।
- महाराष्ट्र के उत्पाद एवं शुल्क मंत्री श्री गणेश दादा नाईक ने कहा कि मैं जन्म से जैन नहीं मैं विचारों से जैन हूँ, मैंने आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमणजी से आशीर्वाद लिया है मुझे याद है आचार्य श्री तुलसी के दर्शन के लिए अपने पुत्र सांसद श्री संजीव नाईक को लेकर गया तब वो 23 वर्ष की उम्र में नवी मुम्बई का महापौर बना था। तभी गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया। हमारा परिवार उस आशीर्वाद को वरदान मानकर समाज से जुड़ा हुआ है। सन् 1900 से आचार्य तुलसी का प्रभाव था आज भी है पहले महाप्रज्ञजी आगे लेकर गये, अब आचार्य श्री महाश्रमणजी ले जा रहे हैं। **आचार्य तुलसी के विचार नवी मुम्बई के मनपा स्कूल के 27,000 छात्र-छात्रायें विद्या के माध्यम से ग्रहण कर रहे हैं।**
- कार्यक्रम में केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री मिलिन देवड़ा, पूर्व गृहमंत्री महाराष्ट्र श्री कृपाशंकर सिंह, विधायक श्री मंगल प्रभात लोढ़ा एवं विधायक श्री मनीष दादा जैन ने भी संबोधित किया एवं आचार्य श्री महाश्रमणजी का मंगल संदेश वाचन समणीजी द्वारा किया गया।
- समणी शारदाप्रज्ञाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी मानव को मानव बनाने आये थे। इस राष्ट्र को आचार्यश्री ने कई अवदान दिये व सरकार ने गुरुदेव के प्रति डाक टिकट व 20 रुपये के सिक्के को जारी कर गुरुदेव की सेवा को बहुमान दिया है।
- कार्यक्रम की शुरूआत संघ गायिका श्रीमती मीनाक्षी भुतोड़िया एवं संघ गायक श्री कमल सेठिया की मंगलमय गुरु स्तुति के साथ हुई। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल, अणुव्रत समिति, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, ज्ञानशाला एवं युवावाहिनी कन्या मंडल गुरुदेव के अमृत वचनों की तख्तियां लहराती झांकियों के साथ हुई। बच्चों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किये व आभार प्रकट श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री विनोद कच्छारा ने किया। मुम्बई कांग्रेस अध्यक्ष श्री जनार्दन चांदुलकर, विधायक श्री चन्द्रकांत हैन्डोरे, पूर्व मुम्बई भाजपा अध्यक्ष श्री राज के. पुरोहित, भाजपा प्रवक्ता साईना एन. सी., अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया, तेरापंथ महिला मंडल मुम्बई अध्यक्ष श्रीमती कान्ता तातेड़, मुम्बई पुलिस आयुक्त श्री सत्यपाल सिंह, महाराष्ट्र सरकार के मुख्य सचिव श्री जयंत बांठिया, नवी मुम्बई शिक्षण समिति सदस्य श्री अर्जुन सिंघवी, सम्माननीय अतिथि आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति के मुख्य संयोजक व जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री डालचन्द कोठारी व पश्चिमांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा संयोजक श्री रमेश सुतरिया आदि की गरिमापूर्ण उपस्थिति व प्रभावक विचार प्रस्तुति हुई।

देश की सुदृढ़ता के लिये आचार्य तुलसी के प्रयासों को भुलाया नहीं जा सकता।

- लाल कृष्ण आडवाणी

- कार्यक्रम स्थल तेरापंथ समाज के 10,000 से ज्यादा भाई-बहिनों (महिलायें केसरिया साड़ी, पुरुष सफेद ड्रेस) से खचाखच भरा था। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के मंत्री श्री दिनेश सुतरिया ने किया। कार्यक्रम के पंडाल में युवावाहिनी व युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था का सुंदर व सफल संचालन किया। महाराष्ट्र पुलिस बैंड की धुनों के साथ झांकियों की प्रभावी प्रस्तुतिकरण जनसमूह को रोमांचित कर रही थी। श्री मंगल प्रभात लोढ़ा द्वारा मुख्यमंत्री से आचार्य तुलसी के जन्म दिवस पर कत्लखाना बंद करने व सार्वजनिक छुट्टी की सशक्त मांग भी रखी गयी।

पूर्वांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा
(पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड, असम, मेघालय, भूटान, नेपाल)
24 नवम्बर 2013 : संयोजक - श्री तुलसी कुमार दुगड़

महासिन्धु को देने बधाई - देखो गीत लहरें गा रहीं।
सुकृतों के पारावार तुलसी - अरूणाई तुम्हें बधा रही।।

- साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ठाणा 6 के सान्निध्य में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपललक्ष्य में 'राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी भावाञ्जलि समारोह' एवं 'पूर्वांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा के शुभारम्भ' पर भव्य, गरिमामय कार्यक्रम कोलकाता के अति प्रसिद्ध स्थल नेताजी इंडोर स्टेडियम में हुआ। इस गरिमामय कार्यक्रम में समणी ज्योतिप्रज्ञाजी, समणी मानसप्रज्ञाजी भी सहभागी बने।
- महासभा भवन से प्रारम्भ '**अणुव्रत संकल्प यात्रा**' रैली में लगभग 6,000 श्रावक-श्राविकाओं के साथ विभिन्न स्कूलों के लगभग 2,500 विद्यार्थियों सहित समारोह स्थल नेताजी इंडोर स्टेडियम में लगभग 12,000 की तादाद में श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़ ने गुरुदेव श्री तुलसी को श्रद्धा भक्ति के साथ भावाञ्जलि समर्पित की।
- भव्य एवं आकर्षक रैली में सबसे आगे 13 बाईक पर सवार 26 युवक तुलसी शताब्दी '**लोगो**' से युक्त ध्वज एवं जैन ध्वज हाथ में थामे चल रहे थे। उसके पश्चात् खुले वाहन में सवार महासभा अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, जय तुलसी फाउण्डेश के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र दुगड़, अ.भा.ते. महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया हाथ में विशाल ध्वज थामे रैली को गति दे रही थी। विशाल रैली कोलकता के विभिन्न अंचलों से गुजरती जन-जन को राष्ट्रसंत तुलसी एवं अणुव्रत से परिचित करवा रही थी। नेताजी इंडोर स्टेडियम में पहुंचने के बाद रैली भावाञ्जलि समारोह में परिणत हो गई।
- इस समारोह में राज्य के वाणिज्य व उद्योग मंत्री श्री पार्थ चटर्जी, शहरी विकास मंत्री श्री फिरहाद हकीम, आवास मंत्री श्री अरूप विश्वास, सांसद श्री सुब्रत बक्शी, सांसद श्री सुदीप बंदोपाध्याय, परिवहन मंत्री श्री मदनमित्रा, प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री तथा सांसद श्रीमती हेमामालिनी, मेयर श्री शोभन चटर्जी, विधायक श्री तापस राय, श्री शान्तिलाल जैन, श्री राजेश सिन्हा, आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति एवं महासभा अध्यक्ष श्री हीरलाल मालू, महासभा प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़, महासभा उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद, महासभा महामंत्री श्री बिनोद कुमार चोरड़िया, महासभा कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोरड़, विकास परिषद् के सदस्य श्री बुद्धमल दुगड़, श्री बनेचन्द मालू, जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़, अ.भा.ते. महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती सूरज बरड़िया, परामर्शक श्रीमती तारादेवी सुराणा, महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया, श्री राजकरण सिरोहिया, श्री सुरेन्द्र चोरड़िया, अणुव्रत संकल्प यात्रा के पूर्वांचल क्षेत्र संयोजक श्री तुलसी कुमार दुगड़, श्री रणजीत कोठारी आदि अनेक सभा संस्थाओं के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।
- 8 घंटे तक अनवरत चलने वाला यह कार्यक्रम विभिन्न विधाओं में संपादित हुआ। जिसकी संक्षिप्त झलकियां समारोह की भव्यता को उजागर कर रही है। साथ ही यह सत्यापित कर रही हैं कि तिमिर का सागर तरने वाले सूर्य का अभिषेक करने रश्मियां तब भी इठला रही थीं, अब भी इठला रही हैं।

आचार्य श्री तुलसी ने अपनी सूझबूझ से अनेक बार देश को संकट से उबारा है।
रूढ़ि मुक्ति, व्यसन मुक्ति और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिये अथक श्रम किया है।
- अखिलेश यादव, उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री

- कार्यक्रम का प्रारम्भ तुलसी आर्ट गैलेरी के उद्घाटन से हुआ। साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू एवं जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़ ने तुलसी आर्ट गैलेरी का उद्घाटन किया। इस गैलेरी में आचार्य तुलसी के जीवन, उनके व्यक्तित्व, कर्तृत्व की अभिव्यक्ति करने वाले बहुत ही आकर्षक चित्र रखे गये थे। तुलसी की स्मृतियों एवं कृतियों की जीवंत प्रस्तुति संग्रहालय की उपयोगिता सिद्ध कर रही थी।
- पूरे भारतवर्ष में प्रथम बार आचार्य तुलसी के जीवन दर्शन को 'लेजर शो' के माध्यम से दिखाया गया। इस कार्यक्रम में आचार्य तुलसी के जीवन चरित्र पर एक वृत्तचित्र का भी प्रसारण किया गया।
- रथ यात्रा के शुभारम्भ की घोषणा साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी आदि साध्वीवृन्द के सान्निध्य में सुप्रसिद्ध अभिनेत्री हेमामालिनी द्वारा की गई। समणी ज्योतिप्रज्ञाजी एवं समणी मानसप्रज्ञाजी इस रथ के साथ यात्रा करेंगी।
- समारोह में आचार्य श्री महाश्रमणजी के कोलकाता चातुर्मास हेतु आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा प्रस्तावित बहुआयामी योजनाओं को 'वाक् थ्रू' द्वारा प्रस्तुतिकरण किया गया। श्री विनोद बैद ने इस संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी।
- इस कार्यक्रम में संघगायक श्री कमल सेठिया एवं मधुर संघगायिका श्रीमती मीनाक्षी भूतोड़िया ने अपने सुरीले कंठों से आचार्य तुलसी द्वारा रचित एवं आचार्य तुलसी पर रचित गीतों का मधुर संगान कर पूरी परिषद् को भक्तिमय एवं तुलसीमय बना दिया।
- आचार्य तुलसी कुशल सृजनहार थे। उन्होंने अपने हाथों से अनेक व्यक्तित्वों का निर्माण किया। उन्होंने साधु-संतों के साथ-साथ हजारों श्रावक कार्यकर्ताओं को तैयार कर कार्यकर्ताओं की एक लम्बी कतार खड़ी कर दी थी। वे कार्यकर्ता संघ की गौरव वृद्धि में योगभूत बने। इस कार्यक्रम में तुलसी युग के स्थानीय कर्मयोगी श्रावकों का '**तुलसी युग के कर्मयोगी**' श्रावक सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही कोलकाता के जैन व जैनेतर समाज के विशिष्ट समाजसेवी एवं उद्योगपतियों को '**तुलसी शताब्दी सम्मान**' से सम्मानित किया गया।
- साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने गुरुदेव तुलसी को भावाञ्जलि समर्पित करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी विराट व्यक्तित्व के धनी थे। उनका व्यक्तित्व आश्चर्यों की वर्णमाला से गुम्फित एक महाभिलेख है। उनके अवदान मानव जाति के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं। हम अच्छे इंसान बनकर ही गुरुदेव तुलसी को सच्ची श्रद्धाञ्जलि दें ऐसा काम्य है।
- साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी समाधायक पुरुष थे। उन्होंने केवल समस्याओं का अवलोकन नहीं किया अपितु उनके समाधान का पथ प्रशस्त किया। उनका कालजयी व्यक्तित्व संघ क्षितिज पर सूर्य के समान देदीप्यमान रहेगा एवं दुनिया को आलेक प्रदान करेगा।
- समणी ज्योतिप्रज्ञाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी परम पुरुषार्थी महापुरुष थे। उनका आत्मानुशासन बड़ा गजब का था। अनुशासन के मसीहा को प्रणाम।
- **समणी ज्योतिप्रज्ञाजी एवं समणी मानसप्रज्ञाजी, साध्वीश्री अणिमाश्रजी, साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ठाणा 6 के लिए श्रद्धेया महाश्रमणीवरा का ऊर्जामय पावन संदेश लेकर आई। संदेश का वाचन कर साध्वीश्रीजी को उपहृत किया। साध्वीश्रीजी ने पट्ट से नीचे उतर कर संदेश को ग्रहण किया एवं कहा - यह पत्र नहीं हमारे जीवन का छत्र है। आपश्री का वरद् आशीर्वाद हमारे कदमों में गति भर रहा है।** इस दृश्य को देखकर पूरी परिषद् भावविभोर हो गई।
- महासभा अध्यक्ष एवं आ. तु. ज. श. स. समिति संयोजक श्री हीरालाल मालू ने कहा कि तुलसी अनुशासना की रचनात्मक उपलब्धियां इतनी ज्यादा है कि उनके आंकलन में गणित का हर फार्मूला छोटा पड़ रहा है। आचार्य तुलसी का सम्पूर्ण जीवन मानवतावादी दृष्टिकोण के प्रति समर्पित था।
- महासभा के प्रधान न्यासी एवं भावाञ्जलि समारोह समिति के संयोजक श्री कमल कुमार दुगड़ ने कहा कि आज पूरा महानगर तुलसीमय बन गया है। आज हम वंदन, अभिवंदन करते हैं उस महापुरुष को जिसने बयासी वर्ष तक अपने जीवन का पल-पल, क्षण-क्षण, कण-कण मानवता व राष्ट्र उत्थान में लगा दिया। यह योगी जीवन भर मनुष्य की उलझी गुत्थियों को सुलझाता रहा।
- सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री एवं राज्यसभा सांसद हेमामालिनी ने नवकार मंत्र के संगान से अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा कि महापुरुषों की प्रलम्ब शृंखला में एक तेजस्वी नाम है - आचार्य तुलसी।

आचार्य श्री तुलसी आत्मानुशासन की अलख जगाने वाले मानवता के मसीहा थे।

- श्रीमती सावित्री जिंदल, शहरी स्थानीय निकाय मंत्री

- सिने अभिनेत्री हेमामालिनी ने साध्वीश्री कर्णिकाश्रीजी, साध्वीश्री सुधाप्रभाजी, साध्वीश्री समत्वयशाजी, साध्वीश्री मैत्रीप्रभाजी, समणी ज्योतिप्रज्ञाजी, समणी मानसप्रज्ञाजी के साथ आचार्य महाश्रमणजी द्वारा रचित शताब्दी गीत का संगान किया जो सबके लिए आकर्षण का केन्द्र बना।
- वाणिज्य एवं उद्योगमंत्री श्री पार्थ चटर्जी, सांसद श्री सुदीप बन्धोपाध्याय व परिवहन मंत्री श्री मदन मित्रा ने अपने श्रद्धसिक्त उद्गारों में तुलसी को समाधायक पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित किया।
- साध्वीवृन्द ने '**तुलसी आवो नी म्हे आज थांरा दरसण करल्यां**' साध्वीश्री अणिमाश्रीजी द्वारा रचित भावपूर्ण गीत का समधुर संगान किया।
- कोलकाता सभा के अध्यक्ष श्री अमरचन्द दुगड़, दक्षिण कोलकाता सभाध्यक्ष श्री भंवरलाल बैद, पूर्वांचल सभाध्यक्ष श्री भूपेन्द्र कुमार श्यामसुखा, दक्षिण हावड़ा सभाध्यक्ष श्री मालचन्द भंसाली, उत्तर हावड़ा से श्री जतन पारख, श्री राकेश संचेती, श्री बुधमल लूणिया, तेयुप अध्यक्ष श्री पारस सेठिया ने अपने भावों की भावभरी प्रस्तुति दी।
- मंगल संगान श्रीमती गुलाब बैद ने कोलकाता महिला मंडल के साथ किया। कार्यक्रम का सफल संचालन सुप्रिया बैद ने किया।
- इस कार्यक्रम की सफल समायोजना में तेरापंथ धर्मसंघ की सभी सभा-संस्थाओं का एकजुट श्रम सफलता की सरगम पर प्रफुल्ल था। श्री नरेन्द्र बरड़िया, श्री हेमन्त दुगड़, श्री नवरतन बोथरा, श्री विनोद बैद, श्री अभय दुगड़, श्री भंवरलाल बैद, श्री विपिन रूंगटा, श्री प्रमोद नाहटा, श्री विमल दुगड़ तथा श्री प्रमोद लुणावत, तेमम की अध्यक्षा श्रीमती मंजू बैद, तेयुप के अध्यक्ष श्री पारस बांठिया एवं उनकी टीम ने कार्यक्रम की व्यवस्था में सक्रिय भूमिका अदा की।
- कोलकाता का प्रसिद्ध नेताजी इंडोर स्टेडियम राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी भावाञ्जलि एवं अणुव्रत संकल्प रथ यात्रा कि शुभारम्भ कार्यक्रम के सुन्दर संयोग से विशिष्ट यादागार स्थल के रूप में तेरापंथ के इतिहास में अंकित हो गया।

दक्षिणांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा (कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, पांडिचेरी)

1 दिसम्बर 2013 : संयोजक - श्री दीपचन्द नाहर

तुलसी के प्रबल पुरुषार्थ की शुभ्र गाथा पर
छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन की आस्था पर
पल-पल नतमस्तक वर्तमान का माथा है. . .

- अणुव्रत संकल्प यात्रा का शुभारम्भ अणुव्रत के संकल्प के साथ ही होना चाहिये - आचार्य धर्मधुरंधर सूरीश्वर ने यह विचार आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति की ओर से 'दक्षिणांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा' के उद्घाटन अवसर पर रविवार को गांधीनगर स्थित फ्रीडम पार्क में आयोजित समारोह में व्यक्त किये। आचार्य ने कहा वर्तमान युग में अणुव्रतियों की महती आवश्यकता है। अणुव्रत का पालन करने के साथ ही स्वयं के मन, कर्म एवं वचन को भी संयमित करना चाहिये। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा थे।
- साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने दो आंखों से लाखों आंखों का करिश्मा दिखाया, दो पांवों से लाखों पांवों को चलना सिखाया। उन्होंने आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात कर लोगों को नई दिशा प्रदान की।
- साध्वीश्री सुमंगलाश्रीजी ने शताब्दी वर्ष के घोष '**जन-जन में जागे विश्वास, संयम से व्यक्तित्व विकास**' के माध्यम से नव उत्साह जगाया। समणी कंचनप्रज्ञाजी ने आचार्य के अवदानों पर प्रकाश डालते हुए गीतिका प्रस्तुत की।
- विशेष अतिथि विधान परिषद् सदस्य श्री लहरसिंह सिरौया ने कहा कि 20वीं सदी आचार्य तुलसी के नाम से जानी, जानी चाहिये। जैनेत्तर लोगों में जैन धर्म की पहचान आचार्य तुलसी से हुई। आचार्य के उपदेशों का अनुसरण करना ही उनके प्रति सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि होगी। उन्होंने आचार्य के सान्निध्य में बिताये सुनहरे पलों का स्मरण किया।
- श्री हम्पानागराज ने कहा कि जैन समाज अल्प नहीं कल्प है। जनसंख्या में भले ही कम हो लेकिन संसाधनों एवं कर देने में आगे है।

बुराईयों को दूर करने की दिशा में नैतिक मूल्यों की कड़िया मजबूत करने के लिये
आज पुनः अणुव्रत आंदोलन को जन आंदोलन बनाने की जरूरत है।
- भूपेन्द्र कुमार हुड्डा, हरियाणा मुख्यमंत्री

- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट, गांधीनगर-बेंगलोर के अध्यक्ष श्री अमृतलाल भंसाली ने अतिथि परिचय के साथ स्वागत किया। दक्षिणांचल संकल्प यात्रा के संयोजक श्री दीपचन्द नाहर ने संकल्प यात्रा की जानकारी प्रस्तुत की।
- विशिष्ट अतिथि डॉ. राधाकृष्णन ने कहा कि जैन समाज अहिंसा व शान्ति का प्रतीक है। समाज से दूसरे समाजों को भी प्रेरणा लेनी चाहिये। उन्होंने आचार्य के अवदानों पर प्रकाश डाला।
- समारोह के अध्यक्ष एवं आ.तु.ज.श.स. समिति के संयोजक श्री हीरलाल मालू ने कहा कि समाज के उत्थान के लिए सहयोग एवं सहभागिता दोनों ही आवश्यक है। यदि किसी कार्य में सहयोग तो है लेकिन सहभागिता नहीं है तो वह कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। किसी भी काम को पूर्ण करने के लिए सहयोग से ज्यादा सहभागिता की आवश्यकता है। मालू ने अन्य राज्यों में शुरू हुई संकल्प यात्राओं के बारे में भी जानकारी प्रदान की।
- समारोह में समिति की ओर से संकल्प यात्रा रथ प्रायोजक श्री नरपतसिंह चोरड़िया एवं श्रीमती इन्द्रा चोरड़िया एवं अतिथियों का सम्मान किया गया।
- समारोह में राजस्थान पत्रिका के स्थानीय संपादक श्री राजेन्द्रशेखर व्यास, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री गौतमचन्द कोठारी, श्री भंवरलाल नाहटा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री प्रकाश लोढ़ा, प्रचार-प्रसार मंत्री श्री चन्द्रशेखर, श्री महेन्द्र मुणोत, श्री दीपक गोठी, श्रीमती पुष्पा गन्ना, श्री विमल कटारिया सहित अनेक लोग उपस्थित थे। अणुव्रत संकल्प यात्रा के सहसंयोजक श्री राजेश चावत ने आभार व्यक्त किया। सशक्त संचालन दक्षिणांचल अणुव्रत संकल्प यात्रा के स्वागताध्यक्ष श्री भूपेन्द्र कुमार मूथा ने किया।

★ **कर्नाटक मुख्यमंत्री श्री सिद्धरामैयाजी ने किया हरी झंडी दिखाकर यात्राका आगाज** - समारोह स्थल के बाहर खड़ा सुसज्जित वातानुकूलित एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त रथ लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना रहा। लोगों ने रथ के अंदर जाकर बारीकी से देखा और मुक्त कंठ से सराहना की। अनेक लोगों ने रथ में बैठकर आनन्द का अनुभव किया। समिति की ओर से मुख्यमंत्री कोष में 5,00,000 की राशि देने की घोषणा की गयी।

- **बेंगलोर के उपनगरों में अणुव्रत संकल्प यात्रा रथ जिसमें श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा विजयनगर, राजाजीनगर, यशवंतपुर, दासरहल्ली, आड़गुड़ी, होसकोटा, माल्लूर, आचार्य तुलसी अस्पताल यशवंतपुर, आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केन्द्र, आचार्य महाप्रज्ञ हाई स्कूल, बालगंगाधर स्वामी रामनगर स्कूल, बिड़दी सभा आदि अनेक क्षेत्रों में हजारों-हजारों लोगों से सम्पर्क करते हुये गतिमान है। आम जनता में रथ के प्रति विशेष आकर्षण है। अणुव्रत संकल्प की प्रेरणा जगाती इस यात्रा के प्रभाव से दक्षिण में हजारों 'अणुव्रती' संकल्पित बनकर नैतिक राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रशस्त है।**

★ **श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा - चण्डीगढ़**

अध्यात्म ज्योति से प्रदीप्त आभा - हे भारत ज्योति! तुम्हें प्रणाम — चण्डीगढ़, 8 दिसम्बर, मुनिश्री विनयकुमारजी आलोक के सान्निध्य में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह का भव्य विराट समायोजन टैगोर थियेटर, सैक्टर 18 में सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि हरियाणा मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा, शहरी स्थानीय निकाय मंत्री श्री सावित्री जिंदल, प्रमुख सैक्रेट्री श्री के. के. खंडेलवाल, कांग्रेस अध्यक्ष श्री फूलचन्द मुलाना, प्रयाग पीठ के शंकराचार्य ओंकारानंद सरस्वती विशिष्ट व प्रमुख सागरजी विशेष अतिथि के रूप में सम्मिलित थे।

आचार्य तुलसी रूढ़िवाद के कट्टर विरोधी थे।

- पृथ्वीराज चौहान, महाराष्ट्र मुख्यमंत्री

- कार्यक्रम के दौरान हरियाणा मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र कुमार हुड्डा ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के आधार पर कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से समाज को एक ऐसी क्रान्ति दी जिस आधार पर मानव मानव बन सके। **श्री हुड्डा ने आचार्य तुलसी के नाम पर हरियाणा के किसी एक राजमार्ग का नाम रखने की स्वीकृति के बारे में घोषणा की। इसके अलावा कोई पार्क, स्कूल या कोई सामाजिक संस्था इत्यादि भी हो सकती है।** उन्होंने आगे कहा कि प्रदेश में जल्द ही अल्पसंख्यक आयोग का गठन किया जायेगा तथा इसमें जैन समाज को प्रतिनिधित्व दिया जायेगा।
- इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने मासिक पत्रिका संवाद् के आचार्य श्री तुलसी पर विशेषांक का भी विमोचन किया।
- समारोह को संबोधित करते हुए शहरी स्थानीय निकाय मंत्री श्रीमती सावित्री जिंदल ने कहा कि जिंदल परिवार भाग्यशाली है कि उन्हें आचार्य तुलसी से गुरु धारणा हासिल हुई। आचार्य तुलसी एक महानविभूति थे जो समाज के हर वर्ग को एक साथ लेकर आगे बढ़े।
- हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री फूलचन्द मुलाना ने आचार्य तुलसी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी के अणुव्रत नियम बच्चों में नैतिक मूल्यों के प्रसार में अहम् भूमिका निभा सकते हैं।
- प्रमुख सैक्रेट्री श्री के. के. खंडेलवाल ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन अपने आप में एक आचर संहिता है। उन्होंने हुड्डा साहबजी से अनुरोध किया कि वह इसका हरियाणा के गली-गली व समाज के कोने-कोने में प्रचार करवायें। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य तुलसी एक चमत्कारिक व्यक्तित्व थे। हरियाणा ग्रन्थ अकादमी द्वारा आचार्य तुलसी के जीवन पर एक पुस्तक का प्रकाशन किया गया है तथा संवाद् सोसायटी द्वारा भी उन पर एक विशेषांक निकाला गया है ताकि युवा पीढ़ी को उनके जीवन से प्रेरणा मिल सके।
- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के मुख्य संयोजक श्री हीरालाल मालू, मुनिश्री प्रमुखसागरजी, शंकराचार्यजी, हरियाणा के लोकायत जस्टिस श्री प्रीतमपालसिंह, जस्टिस श्री एल. एन. मित्तल, हरियाणा प्रदेश तेरापंथी अध्यक्ष श्री घीसाराम जैन, महामंत्री श्री प्रमोद जैन, प्रमुख उद्योगपति श्री सुरिंदर मित्तल आदि सभी विशिष्ट लोगों ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह पर आचार्य तुलसी को श्रद्धासुमन अर्पित किया।
- समारोह के दौरान मुनिश्री विनयकुमारजी आलोक ने फरमाया कि आचार्य तुलसी संसार में एक दुर्लभ संत महात्मा थे। वह एक राष्ट्रविभूति थे जिन्होंने संसार को एक बहुमूल्य भेंट अणुव्रत आंदोलन की दी है। वे अपने व्यापक मानवतावादी दृष्टिकोण और आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक तथा जनोपकारी नीतियों के कारण समस्त मानव समाज के सर्वांगीण विकास के आशा बिन्दु बन गये थे।
- इस विशाल समारोह में हरियाणा के छोटे-बड़े शहरों व गुजरात, उड़ीसा, कर्नाटक, पंजाब, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों से लगभग 30 से अधिक बसों सहित विशाल संख्या में श्रद्धालु समाज ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर ज्योतिपुरुष का उन्नत संकल्पों के साथ अभिषेक किया।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का 'महाचरण' बना
जीवन की समीक्षा का - संयम की गहन तितिक्षा का,
अलौकिक, अभूतपूर्व दीक्षा का, अविस्मरणीय ऐतिहासिक दस्तावेज. . .
कीर्तिधर ने रचा 43 दीक्षाओं का अभिनव कीर्तिमान

- बीदासर में समायोजित बृहत् दीक्षा समारोह अनेक दृष्टियों से तेरापंथ धर्मसंघ का चिर अमर आलेख बन गया। समारोह से संबंधित कतिपय उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार हैं-
- तेरापंथ धर्मसंघ के लगभग 254 वर्षों के इतिहास में एक साथ सर्वाधिक 43 मुनि दीक्षाएं इस समारोह में हुई। इससे पूर्व आचार्य तुलसी ने वि.सं. 1994 में बीकानेर प्रवास में 31 मुनि दीक्षाएं प्रदान कर कीर्तिमान बनाया था। लगभग 76 वर्षों के बाद उन्हीं के सुशिष्य ने उनकी जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में एक नया कीर्तिमान बनाया।

मानवता के मसीहा को अणुव्रत व व्यसन मुक्ति के लिये सदैव याद किया जायेगा।
- गणेश दादा नाईक, महाराष्ट्र सरकार उत्पाद व शुल्क मंत्री

- पूज्यवर ने इस समारोह में 10 भाइयों को मुनि दीक्षा व 15 समणियों तथा 18 बहनों को साध्वी दीक्षा प्रदान की। इनमें से तीन भाई व दो बहनें विवाहित थीं। शेष 38 व्यक्ति अविवाहित अवस्था में दीक्षित हुए।
- कार्यक्रम के प्रारंभ होने से पूर्व तक 39 दीक्षाएं घोषित थीं, किन्तु कार्यक्रम के मध्य एक रोचक मोड़ आया और पूज्यवर ने दो समणियों और दो मुमुक्षुओं को उसी वेश में साध्वी दीक्षा देने की घोषणा की। प्राप्त जानकारी के अनुसार अतीत में पूर्ववर्ती आचार्यों के शासनकाल में कुल आठ दीक्षाएं गृहस्थ वेश में हुई हैं। इस समारोह में दीक्षित होने वाली बारह वर्षीया साध्वी विशालप्रभाजी संभवत: प्रथम साध्वी हैं, जिन्होंने खुले मस्तक दीक्षा ग्रहण की है।
- तेरापंथ धर्मसंघ में कई दशकों के बाद साधुओं की संख्या 165 के पार हुई। संभवत: स्वयं आचार्यप्रवर की दीक्षा के बाद यह प्रथम अवसर है। इस समारोह के पश्चात् तेरापंथ में साधुओं की संख्या 167 तथा साध्वियों की संख्या 559 हो गई।
- एक साथ छह से अधिक साधुओं की दीक्षा का प्रसंग भी लगभग इकहत्तर वर्षों के बाद आया। गुरुदेव तुलसी ने सर्वाधिक 14 भाइयों को एक साथ वि.सं. 1999 में दीक्षित किया था। तेरापंथ के अब तक के इतिहास में यह तीसरा प्रसंग था जब छह से अधिक भाइयों ने एक साथ दीक्षा स्वीकार की। एक साथ सर्वाधिक 33 साध्वियों की दीक्षा का कीर्तिमान इस समारोह में आचार्य महाश्रमण के नाम दर्ज हो गया।
- आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के इस प्रथम दीक्षा समारोह में 43 मुनि दीक्षाएं हुईं। यदि जन्मशताब्दी समारोह के संदर्भ में गत दो वर्षोंमें हुई दीक्षाओं को भी जोड़ा जाए तो संख्या 88 हो जाती है, जो संजोए गए स्वप्न से मात्र बारह कदम दूर है। इनमें से भी आगामी चार दीक्षा समारोह में पांच दीक्षाएं और घोषित हैं।
- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण के तीन वर्ष छह माह पांच दिन के शासनकाल (28 नवम्बर 2013 तक) में 24 साधु तथा 89 साध्वियां, कुल 113 साधु-साध्वियां दीक्षित हुए।
- दीक्षा के लिए कोई उम्र नहीं होती। इस कथन का साक्षात् इस समारोह में हुआ, जहां श्रीडूंगरगढ़ के श्री इन्द्रचन्दजी डागा अस्सी वर्ष की अवस्था में दीक्षित हुए, वहीं मैसूर के ग्यारहवर्षीय बालक प्रियांशु ने भी पूज्यवर से संयम स्वीकार किया।
- बृहत् दीक्षा समारोह से तीन दिन पूर्व पूज्यवर ने सुश्री पारुल बैद (छापर) को साध्वी दीक्षा का आदेश प्रदान किया। पारुल ने पूज्यवर से अपने पिता मुमुक्षु राजेन्द्र के साथ इस समरोह में संयम ग्रहण किया। इतने कम समय में और पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश लिए बिना दीक्षा का होना अपने आप में विशेष बात है।
- दीक्षित होने वाले साधु-साध्वियों में अनेक संसारपक्षीय ज्ञाति हैं। पिता-पुत्री, मां-पुत्री, भाई-बहिन, बहिन-बहिन, मौसी-भाणजी इस प्रकार अनेक जोड़े इस समारोह में दीक्षित हुए।
- तेरापंथ की दीक्षा कसौटी पर कसे बिना नहीं होती, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण था यह दीक्षा समारोह। जब दो समणियां और दो मुमुक्षु बहनें कार्यक्रम के मध्य दीक्षा के लिए प्रार्थना करने लगीं तो **पूज्यवर ने उनकी आन्तरिक भावना को जिस तरह परखा, आचार्य भिक्षु की वह शिक्षात्मक पंक्ति सहसा स्मृतिपटल पर आ गई-'दीख्या दीज्यो देख-देख नै।'**
- पूज्यवर ने स्पष्ट कहा-'संख्या मेरे लिए बड़ी बात नहीं है। किसी प्रकार के दबाव, भय, संकोच, प्रलोभन, आवेश व भावुकता में यह निर्णय नहीं होना चाहिए। यथार्थत: परमपूज्यश्री की यश, प्रतिष्ठा आदि से निर्लिप्तता की साधना वंदनीय और प्रेरणास्पद है। दीक्षा की यह स्वस्थ परंपरा तेरापंथ की चिरजीविता का एक सुदृढ़ आधार है।
- दीक्षा समारोह बीदासर के श्री नेमीचन्द जयचन्दलालजी बैंगाणी के नोहरे में निर्मित विशाल पण्डाल में संपन्न हुआ। इसी स्थान पर अतीत में गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञजी ने भी दीक्षाएं प्रदान की थीं।
- इस समारोह हेतु अस्सी हजार वर्गफीट का पण्डाल बनाया गया जो सादगीपूर्ण, किन्तु आकर्षक था। आच्छादित पण्डाल के समीपस्थ लगभग ग्यारह हजार वर्गफुट का खुला स्थान भी जनता के उपयोग में आया। मंच का बैकग्राउण्ड बंगाली कारीगरों द्वारा थर्माकोल से कलात्मक रूप में निर्मित किया गया, जिसमें भगवान महावीर, तेरापंथ की आचार्य परंपरा, अष्टमंगल के साथ रजोहरण और पात्रों को भी दर्शाया गया था। मंच के समीप एक और मंच ऑडिटोरियम की भांति निर्मित था, जिसमें चार भागों में दीक्षार्थी बैठे थे। पण्डाल में लगे चार एलसीडी के माध्यम से दर्शकों को कार्यक्रम का प्रत्येक क्षण को निकट से देखने का अवसर मिला।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा जन जन को ईमानदारी नैतिकता का पाठ पढ़ाया
व नारी जागरण के लिये क्रान्तिकारी कदम उठाया।

- हेमा मालिनी, अभिनेत्री

- परम श्रद्धेय आचार्यवर ने 1 जनवरी 2013 को बीदासर में समायोज्य दीक्षा समारोह को आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दीक्षा समारोह के रूप में रूपायित करते हुए इसे यथासंभव बृहत् दीक्षा समारोह के रूप में समायोजित करने की घोषणा की थी। आचार्यवर की उस घोषणा के पश्चात सबकी उत्सुकता भरी दृष्टि इस समारोह पर टिकी हुई थीं। बीदासर के वरिष्ठ श्रावक शासनसेवी श्री जंवरीमलजी बैंगाणी तो जब भी गुरुदेव के दर्शन करते, तब प्राय: दीक्षाओं की संख्यावृद्धि के लिए प्रार्थना किया करते। पिछले कुछ महीनों से प्राय: प्रतिदिन यही पूछा जाता-'अब तक कितनी दीक्षाएं घोषित हो गईं और अभी कितनी और घोषित होंगी ?' यह उत्सुकता पूज्यप्रवर द्वारा दीक्षा का प्रत्याख्यान कराने से पूर्व तक बनी रही।
- बृहत् दीक्षा समारोह को लेकर जनता में अत्यधिक आकर्षण और उल्लास का वातावरण था। सुदूर क्षेत्रों से हजारों लोग बीदासर पहुंचे और इस ऐतिहासिक गरिमामय दृश्य को निहार कर धन्यता की अनुभूति की। कार्यक्रम में उपस्थिति लगभग पचीस हजार आंकी गई। पूरा पण्डाल खचाखच भरा था। प्रात: लगभग साढ़े नौ बजे प्रारंभ होकर लगभग तीन घंटे चलने वाले इस पावन समारोह में विशाल उपस्थिति के बावजूद भी उल्लेखनीय शांति थी। केवल गूंज थी तो जयघोषों और 'ऊं अर्हम्' की हर्षध्वनि की। हजारों लोग पण्डाल के बाहर समारोह के साक्षी बने क्योंकि भी उनके लिए टीवी की व्यवस्था की गई थी। गत दो दिनों से पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल के आसपास की गलियों में जन सैलाब-सा उमड़ता दिखाई दे रहा था। दीक्षा की पूर्व रात्रि में दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह में आचार्यवर ने जनता की विराट उपस्थिति को देखकर संकेत किया था-'पण्डाल आज ही इतना भर गया तो कल क्या होगा ?' आयोजकों ने इस संकेत को सजगता से लिया और रात भर जागकर व्यवस्था को विस्तार देने का यथासंभव प्रयास भी किया। फिर भी विशाल उपस्थिति के सम्मुख पण्डाल नाकाफी ही सिद्ध हुआ।
- कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल पर किया गया। संभवत: लाखों नेत्रों ने इस पावन, ऐतिहासिक दृश्य को निहारा। प्रसारण का समय नौ बजे से 12.30 बजे तक रहा। कार्यक्रम प्रारंभ होने से पूर्व दीक्षार्थी शोभायात्रा की झलकियां प्रसारित की गईं। सभी कार्यक्रमों की आध्यात्मिक भव्यता देखकर दर्शक भाव विभोर हो उठे।
- दीक्षार्थियों के परिजनों और आगंतुक हजारों यात्रियों के लिए बीदासरवासियों ने माकूल व्यवस्थाएं कीं। आवास व्यवस्था के अन्तर्गत भव्य आकार के तीन डोम निर्मित किए गए। प्रत्येक डोम में 20 हॉल, अर्थात कुल 60 हॉल निर्मित किए गए। प्रत्येक हॉल में दो-दो कुटीरों का भी निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त 130 कुटीर भी निर्मित हुए। बीदासर के प्राय: सभी विद्यालयों, अन्य अतिथिगृहों, धर्मशालाओं का भी उपयोग किया गया।
- आगंतुकों के लिए साठ हजार वर्गफुट में भोजनालय का निर्माण किया गया। बीदासरवासियों ने इस व्यवस्था के माध्यम से समागत यात्रियों का दिल जीत लिया। इसके अतिरिक्त रियायत दर पर अल्पाहार की व्यवस्था भी उपलब्ध रही। संपूर्ण व्यवस्थाओं में बीदासर के निवासी और प्रवासी कार्यकर्ताओं का निष्ठापूर्ण पुरुषार्थ और कार्यकौशल मुखर हो रहा था।
- प्राप्त जानकारी के अनुसार स्थानीय तेरापंथ महिला के प्रयास से 27-28 नवम्बर को बीदासर में शराब के ठेके और मांस, अण्डे आदि के व्यावसायिक प्रतिष्ठान बन्द रहे।

हुआ नया जन्म, मिला नया नाम - मिली नई पहचान

1.	मुमुक्षु इन्द्रचन्द डागा, श्रीडूंगरगढ़	मुनि आत्मानंद	
2.	मुमुक्षु हेमराज गंग, श्रीडूंगरगढ़	मुनि हेमराज	
3.	मुमुक्षु राजेन्द्रकुमार बैद,छापर,	मुनि रमणीयकुमार	
4.	मुमुक्षु निखिलकुमार पगारिया, कोल्हापुर	मुनि लक्ष्यकुमार	
5.	मुमुक्षु मुकेशकुमार छल्लाणी, मुम्बई	मुनि मौलिककुमार	
6.	मुमुक्षु सोमेशकुमार दूगड़, श्रीडूंगरगढ़	मुनि सुविधिकुमार	
7.	मुमुक्षु अक्षयकुमार लूणावत, हैदराबाद	मुनि वर्धमानकुमार	
8.	मुमुक्षु सौरभकुमार बेगवानी, लाडनूं	मुनि सुपार्श्वकुमार	
9.	मुमुक्षु विवेककुमार कंकुचोपड़ा, पारलू	मुनि विनम्रकुमार	
10.	मुमुक्षु प्रियांशुकुमार नौलखा, मैसूर	मुनि प्रियांशुकुमार	
11.	समणी प्रांजलप्रज्ञा	साध्वी प्रतीकप्रभा	
12.	समणी नूतनप्रज्ञा	साध्वी नव्यप्रभा	
13.	समणी रमणीयप्रज्ञा	साध्वी राजुलप्रज्ञा	
14.	समणी चैत्यप्रज्ञा	साध्वी चैतन्यप्रभा	
15.	समणी समीक्षाप्रज्ञा	साध्वी समृद्धिप्रभा	
16.	समणी पूर्णप्रज्ञा	साध्वी प्रगतिप्रभा	

आचार्य तुलसी की जन्म भूमि और कर्म भूमि में आकर कृतार्थता की अनुभूति कर रहा हूँ।

- राजीव शुक्ला, संसदीय कार्य एवं आयोजना राज्य मंत्री

17.समणी भव्यप्रज्ञा	साध्वी भव्यप्रभा
18.समणी प्रबोधप्रज्ञा	साध्वी प्रभातप्रभा
19.समणी पुनीतप्रज्ञा	साध्वी पुष्यप्रभा
20.समणी मीमांसाप्रज्ञा	साध्वी मधुरप्रभा
21.समणी मनीषाप्रज्ञा	साध्वी मन्दारप्रभा
22.समणी प्रशस्तप्रज्ञा	साध्वी प्रशस्तप्रभा
23.समणी सुविधिप्रज्ञा	साध्वी सिद्धार्थप्रभा
24.समणी पीयूषप्रज्ञा	साध्वी प्रसिद्धप्रभा
25.समणी निश्चयप्रभा	साध्वी नवीनप्रभा
26.श्रीमती सायरदेवी पारख, चूरू	साध्वी सागरप्रभा
27.मुमुक्षु ममता छाजेड़, ग्वालियर	साध्वी मोक्षप्रभा
28.मुमुक्षु पिंकी, बरपेटा	साध्वी पुलकितप्रभा
29.मुमुक्षु मधु नाहटा, कालू	साध्वी माधुर्यप्रभा
30.मुमुक्षु समता मरलेचा, अम्बाजोगई	साध्वी समितिप्रभा
31.मुमुक्षु गुणश्री मालू, नोखा	साध्वी गंभीरप्रभा
32.मुमुक्षु ललिता छाजेड़, गंगाशहर	साध्वी लोकोत्तरप्रभा
33.मुमुक्षु प्रेरणा दफ्तरी, बीदासर	साध्वी पल्लवप्रभा
34.मुमुक्षु इन्दिरा भंसाली, बालोतरा	साध्वी इन्दुप्रभा
35.मुमुक्षु रुचि कोठारी, विशाखापत्तनम	साध्वी रोहितप्रभा
36.मुमुक्षु निकिता रांका, बालोतरा	साध्वी निर्णयप्रभा
37.मुमुक्षु प्रीति गोगड़, बालोतरा	साध्वी प्रांशुप्रभा
38.मुमुक्षु जयश्री दूगड़, श्रीडूंगरगढ़	साध्वी जितेन्द्रप्रभा
39.मुमुक्षु कुसुम परमार, बोरज	साध्वी कार्तिकप्रभा
40.मुमुक्षु पारुल बैद, छापर	साध्वी प्रणवप्रभा
41.मुमुक्षु चन्दा परमार, बोरज	साध्वी चिन्तनप्रभा
42.मुमुक्षु रोशनी जैन, साक्री	साध्वीऋजुप्रभा
43.मुमुक्षु विशाखा, बरपेटा	साध्वी विशालप्रभा

★ आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक - लोकार्पण - श्रद्धार्पण समारोह - सरदारशहर

जो करते हैं सुकृतों से प्यार - दुनिया करती है उन्हें नमन बारम्बार

तेरापंथ धर्मसंघ के दशम आचार्य, प्रज्ञा पुरुष, राष्ट्रसंत, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की पावन स्मृति को संजोने और सम्पूर्ण मानवता को उनके जीवन की महान उपलब्धियों से अवगत कराने एवं उनके सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांतों के साथ-साथ उनके विश्व मैत्री के संदेश को प्रचारित व प्रसारित करने के उद्देश्य से प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ की निर्वाण स्थली सरदारशहर में आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक का विशाल निर्माण किया गया है।

- इस महनीय अवसर पर आचार्यप्रवर ने फरमाया कि इस प्रतिष्ठान का **"अध्यात्म का शान्तिपीठ नामांकन"** अधिक उचित प्रतीत होता है। जिसका लोकार्पण दिनांक 13 दिसंबर, 2013 को परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण के श्रीमुख से उद्घृत मंत्रोच्चार के साथ हुआ।
- अध्यात्म के शांतिपीठ के लोकार्पण के उपरान्त इसमें प्रमुख अनुदानदाताओं के सम्मान का कार्यक्रम एवं सायंकालीन सत्र में धम्म जागरण का श्रद्धासिक्त कार्यक्रम आयोजित किया गया। लोकार्पण के दिन भी कई अनुदानदाताओं ने महासभा के प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ के आह्वान पर मुक्तहस्त से अनुदान की घोषणा की। स्मारक स्थल के निर्माण में प्रारंभ से अब तक जिन अनुदानदाताओं का सहयोग प्राप्त हुआ है, सभी के प्रति हार्दिक आभार अभिव्यक्त किया गया।
- आचार्य महाप्रज्ञ की करुणाशीलता को जनसमुदाय में चिरस्थायी करने हेतु एक स्थायी कोष के निर्माण का चिंतन स्मारक स्थल के निर्माण के समय से ही था। इस संदर्भ में प्रधान न्यासी ने जानकारी दी कि अध्यात्म का शांतिपीठ आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल के नाम से जय तुलसी फाउण्डेशन के तत्वावधान में रु. 5 करोड़ की राशि का एक अक्षुण्ण कोष स्थापित किया जाएगा। यह कोष जय तुलसी फाउण्डेशन के पास रहेगा एवं इसके ब्याज की राशि से प्राप्त आय को महासभा द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल "शांतिपीठ" के माध्यम से मानव सेवा परक कार्यों में सहयोगस्वरूप खर्च किया जायेगा। इस संदर्भ में जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री सुरेन्द्र कुमार दुगड़ से बातचीत का क्रम जारी है एवं शीघ्र ही दोनों संस्थाओं के मध्य एक विस्तृत अनुबंध भी किया जाएगा। महासभा 'आचार्य महाप्रज्ञ मानव सेवा' के नाम से इस कार्य के संपादन हेतु महासभा के अंतर्गत एक स्थायी समिति का गठन करेगी। इसकी विस्तृत रूपरेखा जल्द ही प्रस्तुत की जाएगी। स्मारक स्थल के रखरखाव के लिए भी एक स्थायी कोष के निर्माण हेतु विचार-विमर्श किया जा रहा है।

आचार्य तुलसी ने जाति, वर्ग, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर
मानव मात्र को एक माला में पिरोने का काम किया है।
- राजेश पायलट, केन्द्रीय कार्पोरेट अफेयर्स राज्य मंत्री

- इस महत्वपूर्ण अवसर पर महासभाध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़, न्यासी श्री राजकरन सिरोहिया, श्री रोशनलाल सांखला, उपाध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया, श्री विमल सुराणा, महामंत्री श्री बिनोद कुमार चोरड़िया, सहमंत्री श्री बजरंग कुमार सेठिया, श्री जी. भूपेन्द्र कुमार मूथा, कार्यकारिणी सदस्य श्री अनूप कुमार बोथरा, श्री अरविन्द कुमार धाकड़, श्री अशोक कुमार डोसी, श्री अशोक तातेड़, श्री भंवरलाल एम. जैन कर्णावट, श्री भूपेन्द्र दुगड़, श्री देवराज खींवसरा, श्री धनराज सुराणा, श्री दिनेश कुमार गोलछा, श्री जितेन्द्र कुमार सेठिया, श्री कैलाशचन्द डूंगरवाल, श्री करणीसिंह बरड़िया, श्री मांगीलाल बोथरा, श्री मनोज कुमार सिंघी, श्री नरेन्द्र दुगड़, श्री नरेन्द्र कुमार बरड़िया, श्री रोशनलाल कालूलाल डागलिया, श्री सलिल लोढ़ा, श्री स्वरूपचन्द बरड़िया, श्री उत्तमचन्द नाहटा विशेष रूप से श्रद्धार्पण हेतु उपस्थित थे।
- इसके अतिरिक्त संयोजकों, सहभागिता प्रभारियों में श्री राजेन्द्र सेठिया, श्री नगराज छाजेड़, श्री बाबूलाल सुराणा, श्री अभय दुगड़, श्री सुरेन्द्र कच्छारा, श्री मानमल सेठिया, श्री रतनलाल जैन दफ्तरी तथा अन्य आमंत्रित व्यक्तियों में श्री नगराज छाजेड़, श्री सम्पतलाल जैन आस्था के आस्थान पर आस्था दीप जलाने को प्रस्तुत थे।
- स्मारक स्थल के निर्माण में उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद, ट्रस्टी श्री बिमल कुमार नाहटा एवं कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ का निष्ठापूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है।
- ज्ञातव्य है कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में निर्मित इस स्मारक का निर्माण कार्य महासभा के प्रधान न्यासी श्री कमल कुमार दुगड़ के कुशल निर्देशन में संपन्न हुआ है। अब इसमें केवल साज-सज्जा (इंटीरियर डेकोरेशन) का कार्य अवशिष्ट है जो शीघ्र ही पूरा कर लिया जाएगा। महासभा के राष्ट्रीय संगठन व्यवस्था प्रभारी श्री तुलसी कुमार दुगड़ के साथ-साथ आर्किटेक्ट श्री संजय कोठारी, एलायड कंस्ट्रक्शन के श्री प्रशांत बुच्चा के सहयोग से स्मारक स्थल के निर्माण कार्य को गति मिली है।
- **आचार्य महाप्रज्ञ स्मारक स्थल - चित्र चित्रण -** स्मारक के चारों तरफ हजारों व्यक्तियों के बैठने लायक स्थान का व्यवस्थित रूप से निर्माण हो चुका है। स्मारक स्थल के एक तरफ 6 हॉल बनाए गए हैं, जिनमें संग्रहालय, दृश्य-श्रव्य कक्ष, रोबोटिक सेंटर, ध्यान कक्ष, कला दीर्घा, पुस्तकालय आदि का संचालन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त एक ओपन एयर थियेटर का निर्माण भी हो चुका है, जहाँ पर एक स्थायी स्टेज का निर्माण किया जा चुका है, जिसमें 2 कमरों की व्यवस्था की गयी है और 4000 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है। ओपन थियेटर के पीछे 2 गेस्ट हाउस बनाए गए हैं जहाँ 22 कमरों के साथ-साथ प्रत्येक गेस्ट हाउस में एक-एक किचेन की व्यवस्था भी की गयी है। भविष्य में जरूरत पड़ने पर गेस्ट हाउस को उपर की तरफ और बढ़ाया जा सके ऐसी व्यवस्था खुली रखी गयी है ताकि आवश्यकतानुसार और निर्माण किया जा सके। इसके अतिरिक्त इसमें एक भोजनालय की व्यवस्था भी की गयी है। पूरे स्मारक स्थल की प्रत्येक गतिविधि को शीघ्र ही क्लोज सर्किट टी. वी. के जरिए संचालित करने की प्रगति सूचक योजना भी है।

★ महासभा – अपने शताब्दी वर्ष की संपन्नता पर गुरु प्रसाद पा हुई धन्य

''शुभम् भूयात् मंगलं भूयात्'' – आचार्य श्री महाश्रमण

महासभा दूसरी शताब्दी में प्रवेश कर रही है। पहली शताब्दी की संपन्नता और दूसरी शताब्दी के प्रवेश के इस अवसर पर कामना है कि पहली शताब्दी जितनी यशस्वी रही है, दूसरी शताब्दी उससे ज्यादा यशस्वी हो। वर्तमान नेतृत्व को महासभा को दूसरी शताब्दी में प्रवेश कराने का अवसर मिला है। ऐसा अवसर भी हर किसी को कहां मिलता है? वर्तमान में हीरालालजी मालू महासभा के अध्यक्ष हैं। चीफ ट्रस्टी कमलजी दूगड़ आदि अनेक कार्यकर्ता महासभा की सेवा में संलग्न हैं। ये लोग कितना समय, शक्ति और दिमाग लगाते हैं। ऐसे लोग, जिनका अपना निजी व्यवसाय हो, फिर भी संस्था और समाज के लिए इतनी भागदौड़ करना भी एक बड़ी बात है। इनके लिए बेंगलुरु, कोलकाता, गुजरात, राजस्थान मानों घर से खेत तक का रास्ता हो।

उचित मार्गदर्शन देने वाला आचार्य तुलसी जैसा व्यक्तित्व दुर्लभ है।

- प्रकाश टांटिया, आर्म्ड फोर्स ट्रिब्यूनल के चेयरमैन व न्यायमूर्ति

- मैं देखता हूं कार्यकर्ताओं में कितना समर्पण है, कितनी लगन, कितना विनय, अनुशासन और कार्यकौशल है। प्राय: सबके अपने-अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान हैं। कितने-कितने वर्कर उनमें काम करते होंगे। परन्तु यहां आते हैं तो बिल्कुल छोटे से कार्यकर्ता बनकर आते हैं। हमारे पास तो भौतिक संपत्ति के नाम पर कुछ भी नहीं, स्थान भी मांग कर लेना होता है, रोटी के लिए भी हाथ पसारना पड़ता है, ऐसे हम अकिंचन लोगों के सामने इतने बड़े-बड़े धनवान लोग, विनयभाव से छोटे बनकर इंगित और मार्गदर्शन लेते हैं। महासभा के कार्यकर्ताओं की निष्ठा और समर्पण भी अपने आप में विशिष्ट है। महासभा और समाज के लिए यह शुभ संकेत है।
- अभी बताया गया कि महासभा कितनी-कितनी गतिविधियां चला रही है। कार्य भी उसी को सौंपा जाना चाहिए, जो कार्य करने में सक्षम हो। महासभा के पास तो न जाने कितने-कितने कार्य हैं। कार्य की बात आती है तो मैं कई बार महासभा का नाम लेता हूं कि वहां से सम्पर्क करो। वह इतनी सक्षम संस्था है कि जागरूकतापूर्वक ध्यान दे सकेगी। हालांकि कभी कोई त्रुटि और प्रमाद भी हो सकता है। जब कभी लगे कि जागरूकता में कमी आ रही है, आचार्य उस ओर इंगित कर सकते हैं। गुरु को कान खींचने का अधिकार होता है। अपेक्षानुसार कड़े निर्णय भी लेने पड़ सकते हैं। मजबूती, पात्रता और स्वभाव को देखकर ही कठोरता की जानी चाहिए। कड़ाई करें भी तो किसके लिए? सामने वाले के हित के लिए, उसके विकास के लिए, उसकी सुरक्षा एवं लाभ के लिए। मुझे तो लगता है कि तेरापंथ समाज का सौभाग्य है कि ऐसी संस्था तेरापंथ समाज को प्राप्त है। सौभाग्य के बिना सक्षम संस्था या संगठन की प्राप्ति भी मेरी दृष्टि में संभव नहीं है।
- महासभा की यह सौ वर्षों की संपन्नता उसके द्वारा समाज को दी गई सेवाओं की कहानी है। प्राचीन साहित्य में 'जीवेम शरद: शतम्' की बात आती है। सौ वर्षों तक जीने की कामना आदमी के लिए है। संस्था तो सौ वर्षों से भी ज्यादा लंबे काल तक जीवित रह सकती है।
- वर्तमान नेतृत्व भी खूब अच्छे ढंग से काम करे, महासभा को आध्यात्मिक और पवित्र दिशा में आगे बढ़ाने का प्रयास करे। ऐसी संस्था को पवित्र सेवा देना भी सौभाग्य की बात है। वर्तमान नेतृत्व संस्था के भविष्य को अच्छा और ज्यादा से ज्यादा निर्बाध व निर्विघ्न बनाने का प्रयास करे। ऐसा करके वे मानों भावी नेतृत्व पर भी एक प्रकार का उपकार करेंगे। वर्तमान में महासभा से जो पदाधिकारी और कार्यकर्ता जुड़े हुए हैं, वे खूब आध्यात्मिक और निर्मल भावना से खूब पवित्र सेवा करें।
- **महासभा की यह दूसरी शताब्दी खूब अच्छी और कार्यकारी बने, महासभा से समाज को धार्मिक/आध्यात्मिक संपोषण प्राप्त होता रहे। हमारे साधु-साध्वियों और समणश्रेणी का भी अपनी सीमा में जितना निरवद्य, पवित्र एवं उचित योगदान संभव हो सके, महासभा को मिलता रहे। महासभा आध्यात्मिक दिशा में खूब आगे बढ़े, खूब अच्छा विकास करे। शुभम् भूयात् मंगलं भूयात्।**

★ आचार्य तुलसी कैलेण्डर

आचार्य तुलसी जैसे युगपुरुष की युगीन वाणी में युग बोध पाना वैसा ही है, जैसे लैम्प पोस्ट के प्रकाश को सदैव अपने पास रखना ताकि अंधेरा घेर न पाये और हम भटकाव से हमेशा दूर रहें।

- प्रत्येक तेरापंथी परिवार इससे लाभान्वित हो सके इसके लिये महासभा अपनी संलग्न सभाओं को आचार्य तुलसी के अमृत वचनों से परिपूर्ण कैलेण्डर नि:शुल्क प्रेषित कर रही है। सम्बन्धित सभायें उनसे सम्पर्क कर अपने क्षेत्रीय परिवारों की संख्यानुसार कैलेण्डर की प्रतियां मंगा सकती हैं।
- इस संदर्भ में जिन-जिन महानुभावों को दायित्व सौंपा गया है उनकी सूचि इस प्रकार है :-

श्री करणीसिंह बरड़िया	आन्ध्र प्रदेश	+91 94404 36655	श्री शम्भूलाल जैन	उड़ीसा वेस्ट	+91 94372 01947
श्री उत्तमचन्द नाहटा	असम	+91 94350 61677	श्री घीसाराम जैन	हरियाणा	+91 94160 43103
श्री नेमीचन्द बैद	बिहार	+91 93042 88757	श्री सुरिंदर मित्तल	पंजाब	+91 9357087409
श्री मदन चोरड़िया	झारखण्ड	+91 94701 97852	श्री माणकचन्द मूथा	कर्नाटक	+91 91413 15792
श्री अमरचन्द दुगड़	कोलकाता	+91 98301 20107	श्री विमल सुराणा	उत्तर प्रदेश	+91 98102 75680

आचार्य तुलसी ऐसे युगपुरुष थे जो मानवता के संरक्षण हेतु सदैव सक्रिय रहे।

- मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी

श्री सुकनराज परमार	तमिलनाडु	+91 94447 97775	श्री दिनेश गोलछा	नेपाल	+977 98520 20321
श्री सुखराज सेठिया	दिल्ली	+91 98110 99918	श्री विनोद कच्छारा	मुम्बई	+91 98330 57517
श्री विनोद बांठिया	गुजरात	+91 98241 14920	श्री किशन लाल डागलिया	महाराष्ट्र	+91 98692 04725
श्री महेन्द्र धारीवाल	छत्तीसगढ़	+91 98271 36300	श्री गौतम सालेचा	जोधपुर	+91 94141 08229
श्री पूनमचन्द बरबेटा	मध्य प्रदेश	+91 94251 95268	श्री हंसराज डागा	बीकानेर	+91 94141 39098
श्री मोहनलाल सिंघी	उड़ीसा ईस्ट	+91 94370 30594	श्री पन्नालाल पुगलिया	जयपुर	+91 98295 41396
श्री रोशनलाल सांखला	उदयपुर	+91 98290 44888	श्री मांगीलाल बोथरा	भुटान	+91 97552 52069
श्री बजरंग सेठिया	पश्चिम बंगाल, सिक्किम	+91 94340 67700			

★ प्रभु बनकर ही हम प्रभु की पूजा कर सकते हैं

आचार्य तुलसी द्वारा रचित उपरोक्त पंक्तियां आज स्वयं अपने सृजनकर्ता की अभ्यर्थना में शत-शत बार मुखर होने को आतुर हैं. . . आईये अनुत्तर संयम के धारक आराधक-साधक, कालजयी शताब्दी महापुरुष का अभिषेक संयम के बहुमूल्य रत्नों से करते हुये हम सब आत्म कल्याण के मार्ग पर प्रशस्त बनें।

परम उपकारी हैं हमारे गुरु आचार्य श्री महाश्रमणजी जिनके द्वारा प्रदत्त मात्र तीन नियमों को स्वीकार कर हम सब आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के इस महायज्ञ में अपने कर्मों की आहुति देकर संयम की ज्योत को प्रखर बना सकते हैं।

संकल्प पत्र

परमपूज्य आचार्यप्रवर!

सविधि वंदना!

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के संदर्भ में आपश्री द्वारा प्रदत्त परामर्श को मैं अपने आत्मकल्याण हेतु एक वर्ष के लिए सहर्ष स्वीकार करता हूँ/करती हूँ।

1. चौविहार अथवा तिविहार रात्रिभोजन का परिहार। ( )
2. झूठ बोलने से बचना, कदाचित् इस संदर्भ में स्खलना हो जाए, झूठ बोलना पड़ जाए तो एक दिन बोले गये झूठ के परिशोधन के लिए एक उपवास करना। ( )
3. एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य/शीलव्रत की साधना का प्रयोग। ( )

स्वीकारकर्ता : .....

स्थान : .....

संपर्क सूत्र : .....

♦ **नोट:- इस फॉर्म को भरकर कृपया अध्यक्षीय कार्यालय बेंगलोर भिजवावें।**

Hiralal Maloo, Maloo Constructions, AA-204/205, 2nd Floor, 25/26, Brigade Majestic, 1st Main, Gandhinagar, **BANAGALORE-560009** (Karnataka) +91 80 22265737

विशेष ध्यानार्थ

★ **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष समारोह - द्वितीय चरण —** का विशाल आयोजन पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में गंगाशहर में समायोजित है। आचार्य तुलसी की निर्वाण स्थली गंगाशहर में द्वितीय चरण के कार्यक्रम वृहद् स्तर पर आयोजित होने जा रहे हैं। गौरव का विषय है कि इस अवसर पर तेरापंथ धर्मसंघ के 150वें मर्यादा महोत्सव का सुन्दर संयोग भी साथ में मिल रहा है। श्रद्धालु समाज श्रद्धाभिव्यक्ति का यह सुन्दर सुयोग खोना नहीं चाहेगा। ऐसा विश्वास है। आपकी जानकारी के लिये कार्यक्रमों की रूपरेखा इस प्रकार है :-

30 जनवरी 2014	आचार्य तुलसी और आगम सम्पादन
31 जनवरी 2014	आचार्य तुलसी और शिष्य सम्पदा
1 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी और जैन विश्व भारती
2 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी और संघीय संस्थायें
3 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी और शैक्षणिक क्रान्ति
4 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी और अभिनव उन्मेष
5 फरवरी 2014	आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी : द्वितीय चरण मुख्य समारोह

★ शत वर्षों के अनुभवों से समृद्ध
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का 100वां वार्षिक अधिवेशन, गंगाशहर

- सर्वविदित है कि तेरापंथ धर्मसंघ का मर्यादा महोत्सव धर्मसंघ की नींवों को मजबूती देने वाला एवं इसकी प्राचीर पर मंगल कलश स्थापित करने वाला बेजोड़ महोत्सव है।
- इस बेजोड़ महोत्सव के अवसर पर 'महासभा' की उर्ध्वगामी गतिविधियों एवं विकास के स्वर्णिम पृष्ठों की नित नई रचना का सुन्दर प्रसंग जुड़ा हुआ है।
- इस वर्ष भी 'महासभा' अपने परम्परागत विशिष्ट कार्यक्रमों के साथ गंगाशहर की पुण्य धरा पर संघ प्रभावना एवं शक्ति संवर्धन में योगभूत बनेगी।
- सुधि पाठकों से अनुरोध है कि अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर अपनी संस्था के 100वें वार्षिक अधिवेशन को 101 टका सफल बनायें।
- कार्यक्रमों की रूपरेखा :-

1. दिनांक 2 फरवरी 2014 को दोपहर 3.00 बजे सम्बोधन प्राप्तकर्ताओं के सम्मान में '**मिलन गोष्ठी**' एवं सायंकाल 7.30 बजे से 10.30 बजे तक कवि सम्मेलन का आयोजन होगा।
2. दिनांक 3 फरवरी 2014 को श्रद्धेय आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में अपराह्न 2.00 बजे '**सम्बोधन अलंकरण समारोह**' के अंतर्गत सम्बोधन प्राप्त श्रावक-श्राविकाओं अथवा परिवारजन को अलंकरण प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। सायं 7.30 बजे से 8.30 बजे तक तेरापंथ सभा भवन में '**आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह स्वागत समिति के सदस्यों का सम्मान**' समारोह आयोजित किया जायेगा।
3. दिनांक 4 फरवरी 2014 को श्रद्धेय आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में रात्रिकालीन सत्र में '**श्रेष्ठ एवं विशिष्ट सभा पुरस्कार**, '**ज्ञानशाला पुरस्कार**' तथा '**मनोहरीदेवी डागा समाज सेवा पुरस्कार**' समारोह आयोजित किया जायेगा।
4. **दिनांक 5 फरवरी 2014 को सायंकाल 6.00 बजे से महासभा का '100वां वार्षिक अधिवेशन' आयोजित होगा।**

- बिनोद कुमार चोरड़िया
महामंत्री

मात्र 22 वर्ष की अवस्था में 82 वर्ष का अनुभव अर्जित करने वाले आचार्य तुलसी
'टेम्पल ऑफ ट्रांसफोरमेशन' थे। जिन्होंने शंकर की तरह
विषपान कर दुनिया को अमृत रस वितरित किया।
महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों में अनुदान की राशि निम्नलिखित अनुदानदाताओं से अथवा उनके सद्प्रयासों से प्राप्त हुए ।
(दिनांक 11.09.2013 से 10.10.2013)

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

11,00,000/–	श्री बाबुलाल सुराणा, सूरत
8,00,000/–	श्री लोकमान्य गोलछा, काठमांडू (नेपाल)
6,00,000/–	श्री अमरचन्द धर्मचन्द लुंकड़, चेन्नई
5,00,000/–	श्री विजयराज कटारिया, चेन्नई
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लोणार
1,00,000/–	श्री माणकचन्द शुभकरण बैद, जलगांव
1,00,000/–	तेरापंथ महिला मंडल, भिवानी
1,00,000/–	श्री देवाशीष सेठिया, भिवानी
1,00,000/–	श्रीमती कंचन देवी सम्पतमल बैद, चास–बोकारो
1,00,000/–	श्री पुष्पराज ओकचन्द गादिया, चिकमंगलुर
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बिलासीपाड़ा
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नौगांव
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, खारुपेटिया
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेजपुर
1,00,000/–	तेरापंथ महिला मंडल, तेजपुर
1,00,000/–	श्री चम्पालाल रिधकरण सुराणा, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री चम्पालाल सुमेरमल सुराणा, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री कोडामल रिधकरण सुराणा, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री बादरमल हंसराज बाफना, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री राकेश अंजु नाहटा, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री निर्मल निखिल कुमार दुधोड़िया, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री धनराज शान्तिलाल खटेड़, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जोरहाट
1,00,000/–	श्री मानकचन्द प्रदीप कुमार नाहटा, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री रिखबचन्द बाबुलाल सुराणा, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री सुशील कुमार सेठिया, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री मोहनलाल कमलेश कुमार सुराणा, गुवाहाटी
1,00,000/–	श्री अशोक कुमार मोहित कुमार सेठिया, गुवाहाटी
50,000/–	श्री सुरेन्द्र जैन (एडवोकेट), भिवानी

स्मारक स्थल

11,00,000/–	श्री बाबुलाल बोथरा, कोलकाता
10,00,000/–	मेसर्स पी.एस ग्रुप रियल्टी लिमिटेड (श्री सन्तोष सुरेन्द्र दुगड़) कोलकाता
2,11,000/–	श्री भानुकुमार नाहटा, मुम्बई
2,00,000/–	श्री तोलाराम कमल सिंह बैद, मुम्बई
1,51,000/–	श्री सुमेरमल छगनलाल बोथरा परिवार, सरदारशहर
1,11,111/–	श्रीमती विजया देवी मानिकचन्द बैद, मुम्बई
1,11,111/–	श्री नगीनचन्द भंवरलाल नाहर, पांढुरना
21,000/–	श्री बुधमल करणीदान चिण्डालिया, सरदारशहर
5,100/–	श्री भंवरलाल जैन, कोलकाता

आभारी है हम आपके

मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना

10,000/–	श्रीमती जागृति रमेश जैन, ठाणे (मुम्बई)

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

1,00,000/–	श्री मानक नाहटा, कोलकाता
1,00,000/–	श्री बाबुलाल लुणावत, सिलीगुड़ी
25,000/–	श्री विमलचन्द भंडारी, कोलकाता
21,000/–	श्री निर्मल कुमार सुरेन्द्र कुमार बांठिया, कोलकाता
7,100/–	श्री कमल सिंह नाहटा, कोलकाता

उत्तराखण्ड बाढ़ आपदा

11,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, विजयवाडा
10,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तिरुकालीकुण्ड्रम

प्रतिनिधि सम्मेलन

1,00,000/–	श्रीमती सायर हीरालाल मालू, बैंगलोर
1,00,000/–	श्री बुधमल सुरेन्द्र कुमार तुलसी कुमार कमल कुमार दुगड़, कोलकाता

अमृत महोत्सव

2,50,000/–	श्री सुशील पारख, कोलकाता

सहभागिता योजना

75,660/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिलचर
12,056/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, देशनोक
10,200/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बरेली
7,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, वायसी
7,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पुर
5,550/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लाछुड़ा
2,100/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पहुना
1,400/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बदनोर
1,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शंभुगढ़

सहभागिता योजना के अन्तर्गत एकत्रित कुल रु. 1,21,966/– की राशि में से रु. 73,008/– की राशि महासभा को प्राप्त हुई।

(दिनांक 11.10.2013 से 10.11.2013)

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

40,00,000/–	श्री रमेश कुमार हमेरलाल धाकड़, मुम्बई (प्रायोजक)
11,00,000/–	श्री मंगलचन्द मिलापचन्द चोपड़ा, कटक–छोटीखाटू
11,00,000/–	श्री जुगराज नाहर, चेन्नई
11,00,000/–	श्री मुकेश कुमार बाफना, चेन्नई
11,00,000/–	श्री किशनलाल दुगड़, काठमांडू
11,00,000/–	मोहनलाल रंजीत सिंह बैद जनसेवा कोष (श्री प्रकाश, प्रमोद बैद), कोलकाता

7,50,000/–	श्री दिलीप सिंघवी, जोधपुर (प्रायोजक)
6,00,000/–	श्री मोहनलाल योगेश विनय सिंघी, कटक–श्रीडूंगरगढ़
5,00,000/–	मेसर्स जिन्दल स्टेनलेस लि. (एचआरडी) (श्रीमती सावित्री जिन्दल), हिसार
5,00,000/–	श्री वीडीएस गौतम सेठिया, तिरुवन्नामलै
5,00,000/–	श्री जयन्तीलाल सुराणा, चेन्नई
5,00,000/–	विजय सिरोहिया चैरीटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
5,00,000/–	श्री ताराचन्द बांठिया, मुम्बई
4,00,000/–	श्री उत्तमचन्द नाहटा, नौगांव
3,00,000/–	श्री लोकमान्य गोलछा, काठमांडू
2,00,000/–	श्री सुकनराज, संतोष कुमार, राहुल, जिनेश जीरावाला परमार, चेन्नई
1,01,000/–	श्री राजकुमार सेठिया, जलगांव
1,00,000/–	श्री लक्ष्मण सिंह कर्णावट, उदयपुर
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मांड्या
1,00,000/–	श्री शुभकरण चैनरूप बच्छराज विनोद कुमार चोरड़िया, कटक –उदासर
1,00,000/–	श्री रूपचन्द मोहनलाल चोरड़िया, कटक–उदासर
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, किशनगढ़
1,00,000/–	श्री रतनलाल सेठिया, कटक–सरदारशहर
1,00,000/–	श्री मुकेश मनी सेठिया, कटक–छोटीखाटू
1,00,000/–	श्री सुरेश मोतीलाल चोरड़िया, नासिक
1,00,000/–	श्री इन्द्राजमल कासवा, रतलाम
1,00,000/–	श्रीमती मांगीबाई चम्पालाल डोसी, चिकमंगलुर
1,00,000/–	श्री बद्रीलाल पीतलिया, बैंगलोर
1,00,000/–	श्री मनोज दुगड़, हैदराबाद
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जीन्द
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिनहट्टा
1,00,000/–	श्री अनिल सांखला, जलगांव
1,00,000/–	श्रीमती किरण देवी कोठारी, राजनांदगांव
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आमेट
1,00,000/–	श्रीमती प्रेमलता जैन, भिवानी
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रतलाम
1,00,000/–	श्री श्रवण कुमार लक्ष्मीपत डोसी, चेन्नई
1,00,000/–	श्री डालचन्द जैन, हांसी
1,00,000/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हांसी
1,00,000/–	श्री होशियारमल जैन, भिवानी
40,000/–	श्री सोहनलाल विमल कुमार जैन, मालेगांव
25,000/–	श्री नरेन्द्र कुमार दुगड़, रायपुर
11,000/–	श्रीमती शैला बेन के. झवेरी, सूरत

स्मारक स्थल

1,00,000/–	श्री लक्ष्मण सिंह कर्णावट, उदयपुर
66,000/–	श्री आशीष कुमार दुगड़, हैदराबाद

मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना

45,500/–	श्री निखिल कंठालिया, उदयपुर

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

10,00,000/–	श्री विनोद लूनिया, कोयम्बटूर
1,00,000/–	नवरतनमल कंचन देवी डोसी फाउण्डेशन, कोलकाता

51,000/-	श्री इन्द्रचन्द कालूराम सुराणा, दाहोद
5,100/-	श्री मांगीलाल दुगड़, कोलकाता
5,100/-	श्री सुनील कुमार बरड़िया, सिलचर

उत्तराखण्ड बाढ़ आपदा

6,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, वायसी

महासभा शताब्दी वर्ष

11,00,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता

महासभा शताब्दी वर्ष भवन निर्माण योजना के "CENTURION DONORS"

20,00,000/-	श्री सुमित कुमार डाबड़ीवाल, कोलकाता

सहभागिता योजना

97,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भुवनेश्वर
17,400/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरतगढ़
10,200/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उज्जैन
6,700/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जलगांव
3,800/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, माधापार
3,455/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, अम्बिकापुर
3,100/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, डूंगरी

सहभागिता योजना के अन्तर्गत एकत्रित कुल रु. 1,41,655/- की राशि में से रु. 77,455/- की राशि महासभा को प्राप्त हुई।

(दिनांक 11.11.2013 से 10.12.2013)

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

32,50,000/-	श्री दिलीप संघवी, जोधपुर (प्रायोजक)
11,00,000/-	श्री रणजीत कुमार मालू, गुवाहाटी
5,50,000/-	श्री मेहता नागरदास शामजीभाई पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई
5,00,000/-	श्री मनोज कुमार लूनिया, शिलौंग
5,00,000/-	श्री मोतीलाल महेन्द्र कुमार धारीवाल, रायपुर
5,00,000/-	आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउण्डेशन, मुम्बई (प्रायोजक)
5,00,000/-	श्री प्यारेलाल पितलिया, चेन्नई
4,00,000/-	श्री अमृतलाल समर्थमल जैन (मांडोत), रतलाम
3,00,000/-	श्री रामगोपाल प्रवीण कुमार जैन, केसिंगा
2,00,000/-	श्री राजेन्द्र कुमार यश कुमार सेठिया, रायपुर
1,00,000/-	श्री जयचन्दलाल जैन, बुरहानपुर
1,00,000/-	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयसिंगपुर
1,00,000/-	श्री सोहनलाल भांगू, रतलाम
1,00,000/-	श्री बसन्त कुमार राकेश कुमार सुराणा, गुवाहाटी
1,00,000/-	उत्तर कोलकाता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता
1,00,000/-	श्री मानकचन्द मोतीलाल बैद, रायपुर
1,00,000/-	श्री नाथूराम संगीत कुमार जैन, भवानीपटना
1,00,000/-	श्री खजांचीलाल, सुन्दरलाल रामनिवास जैन, केसिंगा
1,00,000/-	मेसर्स जैन ग्लास हाऊस, कटक
20,000/-	श्री सोहनलाल विमल कुमार जैन, मालेगांव

स्मारक स्थल

15,00,000/–	श्री मूलचन्द सुरेन्द्र कुमार बोथरा, बीकानेर
11,00,000/–	शान्ता देवी शारदा चैरिटेबल ट्रस्ट (श्री गोविन्द सारडा), कोलकाता
5,00,000/–	मेसर्स जेड.के.एल बियरिंग इन्डिया प्रा. लि. (श्री सुरेन्द्र चौरड़िया, श्री चैनरूप चिण्डालिया), कोलकाता
5,00,000/–	श्री प्रकाशचन्द बैद, कोलकाता
1,00,000/–	श्री मांगीलाल कमल कुमार डागा, दिल्ली

मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना

11,00,000/–	सेखानी फैमिली चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

11,000/–	श्री हेमन्त नाहटा, कोलकाता
11,000/–	श्री प्रकाशचन्द उम्मेद सिंह कोचर, कोलकाता
5,100/–	श्री मूलचन्द सिंघी, कोलकाता
5,100/–	श्री अशोक अनिल कुमार भंसाली, कोलकाता
5,100/–	श्रीमती विजया देवी नाहटा, कोलकाता

महासभा शताब्दी वर्ष भवन निर्माण योजना के "CENTURION DONORS"

12,00,000/–	श्री विवेक कठोतिया, कोलकाता

सहभागिता योजना

18,600/–	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भीलवाड़ा
15,800/–	श्री खान्देश जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मालेगांव
7,045/–	साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता

सहभागिता योजना के अन्तर्गत एकत्रित कुल रु. 41,445/– की राशि में से रु. 28,623/– की राशि महासभा को प्राप्त हुई।

शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ के अवसर पर गुरुदेव तुलसी के विचार व दर्शन
को देश-विदेश में प्रचारित व प्रसारित करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।
मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष
व्यक्तित्व निर्माण का अकिंचन उत्कर्ष
भारत के प्रत्येक क्षेत्र में छाया परम हर्ष
उत्सव पूर्ण माहौल में हो रहा ऊंचाईयों का स्पर्श

- **चिर नवीन, रमणीय विश्व संत आचार्य तुलसी की अर्चा में श्रद्धा समर्पित कर्तृत्वों की चर्चा अपने चरम उत्कर्ष पर चंहुदिशाओं में गूंज रही है। मानो आचार्य श्री महाश्रमण का आह्वान शतगुना फलवान हो रहा है। उनके मुखारविन्द से निकले अक्षर-अक्षर का मान बढ़ाने में मानो देश की पूरी शक्ति एकजुट हो गयी हो। अपने गुरु को जन्म शताब्दी वर्ष की ऐसी अनुपम भेंट देने वाले शिष्य भी अध्यात्म जगत में आचार्य महाश्रमण जैसे विरले हीं है। कैसा औदार्य कैसा माधुर्य, कैसा अद्भुत सौन्दर्य सजाया है हे! तुलसी तुमने जिसकी तेजस्विता में (महाश्रमण में) दुनिया तुम्हारी तेजस्विता का संदर्शन कर निहाल हो रही है।**
- **तेरापंथ धर्मसंघ के साथ-साथ कृत पुण्य है यह मानव समाज जो तुम्हारी ही कृति में तुम्हारी ही प्रकृति का इस कदर भव्य विस्तार देख चमत्कृत है। तुम तो सृजन के देवता थे ही, तुम्हारी सृजन चेतना अमरता के साथ आज भी हर क्षण स्पन्दित है, जिसे सारी दुनिया प्रणाम करती है।**
- महासभा द्वारा प्रेषित प्रारूप के आधार पर पूरे देश में एकरूपता के साथ मनायी जा रही **आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी** तुलसी की महिमा को गरिमा के साथ अभिमण्डित कर रही है। रैलियां, भव्य समारोह, तुलसी प्रवचन मालायें, अणुव्रत संकल्प यात्रायें ऐसा विहंगम दृश्य दिखला रहीं है मानो सैंकड़ों वर्षों बाद तुलसी का पुनर्जन्म हो गया हो।
- भक्ति की ऐसी शक्ति जिनके लिये जाग जाये वहां कुछ भी असम्भव नहीं है। **चहुं ओर संकल्पों की टंकार है, गतिशील कदमों की हुंकार है कुछ नहीं गुरुवर हर तरफ तुम्हारा ही संसार है... तुम्हारा ही संस्कार है...**
- 'अभ्युदय' परिवार गद्गद् भावों से प्राप्त रिपोर्टों की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत कर गौरवान्वित है...
- **प्राप्त रिपोर्ट** पचपदरा, बरपेटा, कृष्णा नगर-दिल्ली, विजयवाड़ा, कोकड़ाझाड़, दक्षिण हावड़ा-कोलकोता, रायगंज, जगराओ, शाहीबाग-अहमदबाद, चैन्नई, दुर्गापुर, नोखा, धुबड़ी, गदग, चिकमंगलूर, सिरसा, धुलाबाड़ी-नेपाल, भट्टा बाजार, हांसी, सरायपाली, सूरत, पड़ासली, हैदराबाद, बेंगलोर, तुषरा, कटक, उधना, राजसमन्द, चिताम्बा, फरीदाबाद, उदयपुर आदि।

★ समागत विशिष्ट व्यक्तित्वों की सूचि -

बरपेटा - बरपेटा के स्थानीय विधायक श्री रंजीत दारा, बरनगर के एस. डी. सी. श्री पुलक पाटगिरी, बरपेटा रोड़ पौर सभाध्यक्ष श्री दिलीप साहा, बरपेटा रोड़ थाना के श्री ओ. सी. रतन भूया, दिगम्बर जैन समाज बरपेटा के श्री अरूण जैन, मारवाड़ी समाज बरपेटा के श्री भैरू शर्मा व प्रो. जवाहरलाल नाहटा की विशेष उपस्थिति में समारोह की समायोजना हुई।

कृष्णा नगर, दिल्ली - सान्निध्य साध्वीश्री विद्यावतीजी, विधायक श्री हर्षवर्धन, नगर निगम पार्षद श्रीमती कल्पना जैन।

दक्षिण हावड़ा - सान्निध्य साध्वीश्री अणिमाश्रीजी व समणी मंगलप्रज्ञाजी, प्रखर चिंतक श्री कृष्णविहारी मिश्र, ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट सुश्री पूनम सिंघी, सी.टी.सी. चेयरमैन श्री शांतिलाल जैन, पार्षद श्री संतोष पाठक एवं श्रीमती सुनीता झंवर, कृषि एवं विपणन मंत्री श्री अस्व रॉय, टी.एस.सी. वाईस प्रेसीडेंट श्री महेन्द्र अग्रवाल, साहित्यकार श्री जुगलकिशोर जेठलिया आदि।

कटक - दिगम्बर जैन समाज से श्री राजकुमार छनावत, विशिष्ट समाज सेवी श्री जगदीशप्रसाद गुप्ता, गायक कलाकार श्री दिनेश जोशी, मूर्तिपूजक समाज के श्री आनंदमल कोचर आदि।

जगराओ - विधायक श्री एस.आर. कलेर, भाजपाध्यक्ष श्री राज वर्मा, आर.एस.एस. प्रमुख श्री दिलीप जोशी, काउंसलर श्री हनी गोयल।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से जीवन पर्यन्त अशान्त मानव को शान्ति का संदेश दिया।

अनुराग ठाकुर, भाजपा युवा मोर्चा राष्ट्रीय अध्यक्ष

शाहीबाग, अहमदाबाद – सान्निध्य मुनिश्री धर्मेशकुमारजी, आचार्य श्री राष्ट्रसंत पदमसागरसूरी जी।

चैन्नई – सान्निध्य साध्वीश्री कंचनप्रभाजी, महापौर श्री सेदेहुरै सामी, राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त श्री दयानंद भार्गव (संस्कृत विद्वान), आचार्य नानक पाल संघ के मंत्री श्री सज्जनराज सुराणा, तमिल भाषा के विद्वान श्री कृष्णचंद चोरड़िया, सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती नयना झाबक, तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री सुधीर लोढ़ा।

नोखा – सान्निध्य साध्वीश्री विजयश्रीजी, भागवताचार्य श्री कन्हैयालाल पालीवाल।

धुबड़ी – जिला उपायुक्त श्री कुमुदचन्द्र कलिता, धुबड़ी-गौरीपुर, उन्नयन प्राधिकरण अध्यक्ष श्री परशुराम दुबे, भोलानाथ महाविद्यालय के गिरीन्द्रनाथ गोस्वामी, बंग साहित्य सम्मेलन अध्यक्ष श्री देबाशीश भट्टाचार्य, अग्रवाल समाज समिति अध्यक्ष श्री राजकुमार अग्रवाल, लायंस क्लब अध्यक्ष श्री अशोक कुमार अग्रवाल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक जिला प्रचारक श्री जी. कन्नन ब्राह्मण समाज समिति, सतसंग समिति के सदस्यगण व नगर पार्षद श्री दिनेश धनावत।

गदग – सान्निध्य साध्वीश्री संगीतश्रीजी।

चिकमंगलूर – विधायक श्री सी. टी. रवि।

सिरसा – सान्निध्य साध्वीश्री शुभवतीजी।

भट्टा बाजार – नगर मेयर श्री कनीज राजा, रेड क्रॉस सोसायटी के राज्य उपाध्यक्ष डॉ. देवी रामजी।

हांसी – सान्निध्य साध्वीश्री सोमलताजी, बी.डी.पी. ओ. अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश शर्मा, एच.सी.एस. श्री सतीश।

सूरत – सान्निध्य साध्वीश्री काव्यलताजी, श्री प्रेमदान भारतीय, कॉरपोरेटर श्री किशोर बिंदल, पूर्व सांसद श्रीमती सविता शारदा, श्री निर्मलेश आर्य, श्री अशोक कानूनगो, लायंस डिस्ट्रीक्ट गवर्नर व गायनोलॉजिस्ट डॉ. भानुबहन पटेल, विख्यात शिक्षाविद् श्री घनश्याम प्रसाद धनाढ्य आदि।

पचपदरा – सान्निध्य साध्वीश्री उज्ज्वलरेखाजी, तहसीलदार श्री विवेक व्यास।

हैदराबाद – सान्निध्य साध्वीश्री कीर्तिलताजी।

चिताम्बा – मुनिश्री दर्शनकुमारजी के सान्निध्य में विशाल समारोह व 'तुलसी गीत माला' का भव्य आयोजन सभाध्यक्ष श्री नेमीचन्द मांडोत की अध्यक्षता में विशेष उत्साह के साथ आयोजित हुआ, आभार ज्ञापन में मंत्री श्री महावीर भटेवरा की भक्तिमयी कृतज्ञ भावना मुखर थी।

बेंगलोर – साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी के सान्निध्य में भाजपा जनरल सेक्रेटरी कर्नाटक श्री निर्मल सुराणा, श्री श्री शिवरूद्रा स्वामी मठाधीश बेलीमठ व मेयर बीबीएमपी श्री वी. एस. सत्यनारायण की विशेष उपस्थिति रही।

फरीदाबाद, एन.सी. आर. दिल्ली – साध्वीश्री यशोमतीजी के सान्निध्य में वृहत कार्यक्रम आयोजित हुआ।

राजसमन्द – साध्वीश्री गुणमालाजी के सान्निध्य में भव्य कार्यक्रम की समायोजना हुई।

नई दिल्ली – सान्निध्य शासन गौरव मुनिश्री सुखलालजी स्वामी, भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवानी, ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री प्रदीप जैन, डॉ. हर्षवर्धन, आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज।

★ रचनात्मक दमखम - उत्साहवर्धक कदम

दक्षिण हावड़ा – तेरापंथी डॉक्टर्स सम्मान समारोह व हार्ट चेकअप कैम्प वी एस बिड़ला हार्ट रिसर्च सेंटर द्वारा व डेंटल चेकअप कैम्प डॉ. अरिहंत सिंघी व डॉ. पीयूष विनायकिया द्वारा आयोजित किया गया।

चैन्नई – 1. सन् 1982 से मद्रास यूनिवर्सिटी में प्रतिवर्ष 'आचार्य तुलसी व्याख्यान माला' चल रही है।
2. मद्रास यूनिवर्सिटी के जैन रिसर्च सेंटर से एम.ए. उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को अणुव्रत मेडल प्रदान किया जाता है, यह गौरव की बात है।

नोखा – आचार्य तुलसी की 46 तस्वीरों का लोकार्पण।

धुबड़ी – भारत के पूर्व राष्ट्रपति द्वारा लिखित पुस्तक 'Living With A Purpose' पुस्तक से आचार्य श्री तुलसी व उनके अणुव्रत आंदोलन पर लिखित उनके महत्वपूर्ण विचारों को Leaflet के रूप में प्रकाशित कर जनता का उपलब्ध करवाया गया व अणुव्रत की सुदीर्घ गूंज एवं महत्ता को बहुमान दिया गया।

हैदराबाद – हैदराबाद के प्रमुख साहित्यकारों का सम्मान...

नई दिल्ली – अणुव्रत पत्रिका के लोकतंत्र व अणुव्रत पर विशेषांक प्रकाशित।

लाडनूं – आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी विशेषांक का प्रकाशन।

उदयपुर – आठ चिकित्सा शिविरों का आयोजन।

★ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा – संगरिया

अणुव्रत संकल्प बढ़ते चरण – पिछले दिनों पूरे भारत में 'अणुव्रत' की नैतिक क्रान्ति का मंगल मंत्र पूरे तंत्र में गूंज रहा है। इस आयोजन को आगे बढ़ाने के लिये महासभा द्वारा अपनी संलग्न सभाओं को अणुव्रत संकल्प पत्र भेजे गये थे। चारित्रआत्माओं की प्रेरणा से अणुव्रत संकल्प धारण करने वालों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। जिसका प्रशस्त उदाहरण है संगरिया क्षेत्र जहां मुनिश्री विजयराजजी के अथक श्रम से 4548 छात्र एवं 242 शिक्षकों ने अणुव्रत के नियमों को स्वीकार कर नैतिकता की सुर सरिता में पवित्रता का बोध पाया है।

★ मद्रास विश्वविद्यालय में आचार्य तुलसी व्याख्यान माला – 16 वर्षों से निरन्तर संचालित

- **उल्लेखनीय है कि चारों जैन समाज का प्रतिनिधित्व होते हुये भी यहां 16 वर्षों से तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् आचार्य श्री तुलसी के क्रान्त विचारों से अभिप्रेरित 'आचार्य तुलसी व्याख्यान माला' का निरन्तर समायोजन हो रहा है। जो सम्पूर्ण जैन धर्मावलम्बियों के लिये गौरव सूचक है।**
- जैन समाज का सौभाग्य है कि ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्मित मद्रास विश्वविद्यालय में 'जैन विद्या विभाग' सफलता के साथ संचालित हो रहा है।
- **उल्लेखनीय है कि आध्यात्मिक वैज्ञानिक व नैतिक मानव निर्माण की दिशा में यहां प्रेक्षध्यान व योगाभ्यास का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। साथ ही एम. ए. की डिग्री प्राप्त करने वाले छात्रों को 'अणुव्रत मैडल' देकर वर्धापित किया जाता है। जो अणुव्रत की लोकप्रियता के साथ हर युग में उसकी प्रासंगिकता को स्वयं उजागर करता है।**
- ज्ञातव्य है आचार्य तुलसी की दक्षिण यात्रा के दौरान चैन्नई आगमन पर तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अणादुरै द्वारा इसी विश्व विद्यालय के विशाल सभागार में 'आचार्य तुलसी स्वागत समारोह' का चिर स्मरणीय कार्यक्रम आयोजित किया गया था।
- चैन्नई, दिनांक 21 नवम्बर 2013 को साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ठाणा 5 के सान्निध्य में आचार्य तुलसी व्याख्यान माला श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी ट्रस्ट, ट्रिप्लीकेन द्वारा आयोजित की गई।
- इस अवसर पर जैनोलोजी विभागाध्यक्ष प्रो. श्रीमती प्रियदर्शना ने साध्वीवृन्द के पदार्पण के लिए कृतज्ञता के साथ अभिवंदना करते हुए मुम्बई से समागत मुख्यवक्ता डॉ. दिलीप सरावगी के स्वागत में विचार रखे।
- मुख्यवक्ता डॉ. दिलीप सरावगी ने तकनीक एवं आध्यात्मिकता विषय पर सटीक विश्लेषण करते हुए कहा कि आधुनिक जीवन शैली का प्रिय शब्द है टेक्नोलॉजी। इससे सिद्ध हर तथ्य पाठक के मस्तिष्क में उतर जाता है परन्तु मात्र भौतिकता से यह टेक्नोलॉजी जुड़ी न रहे। हम आध्यात्मिकता के साथ वैज्ञानिक नियमों की खोज करें। आचार्य तुलसी की भाषा में आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व्यक्तित्व के निर्माण का लक्ष्य बनायें।
- साध्वीश्रीजी ने फरमाया कि आचार्य श्री तुलसी ने सम्प्रदाय से ऊपर उठकर शुद्ध अध्यात्म में जीना सिखाया, साधना का आधार, स्वाध्याय, जप, तप आदि संयम के उपक्रमों को मूल्यत्ता प्रदान करते हुए राग द्वेष विजेता बने।
- कार्यक्रम में सभाध्यक्ष श्री पुखराज बडोला, महिला मंडल, ट्रिप्लीकेन ट्रस्ट के सचिव श्री संतोष धारीवाल, जैनोलॉजी विभाग में श्रम सेवारत श्री किशनचन्द चोरड़िया, संस्थापक श्री सुरेन्द्रभाई मेहता (91), श्री गौतमचन्द डागा आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।
- करीब 2 घंटे चली इस व्याख्यान माला का संयोजन व संचालन विभागाध्यक्ष श्रीमती प्रियदर्शना ने किया। विभागीय छात्र-छात्राओं, जैन-जेनेत्तर भाई-बहिनों की उपस्थिति प्रभावक रही।

मंगलमय हो
– महासभा परिवार

नवसारी

अध्यक्ष	:	श्री नवरतनमल टेबा
उपाध्यक्ष	:	श्री सुरेश कुमार काल्या
मंत्री	:	श्री अनूपचन्द पुगलिया
उपमंत्री	:	श्री जितेन्द्र बरड़िया
कोषाध्यक्ष	:	श्री महावीर सेठिया

बंगाईगांव (दक्षिण)

अध्यक्ष	:	श्री अमृतलाल दुगड़
उपाध्यक्ष	:	श्री शान्तिलाल डाकलिया
		श्री जेठमल श्यामसुखा
मंत्री	:	श्री सुशील भंसाली
कोषाध्यक्ष	:	श्री धनपत सिंह बोकड़िया

फाजिलका

अध्यक्ष	:	श्री देवेन्द्र सिंह सावनसुखा
संरक्षक	:	श्री राजेन्द्र सिंह सावनसुखा
उपाध्यक्ष	:	श्री अजय सिंह सावनसुखा
मंत्री	:	श्री विकाश डागा
सहमंत्री	:	श्री विमल सोनावत
कोषाध्यक्ष	:	श्री सुरेन्द्र सोनावत

नोगांव

अध्यक्ष	:	श्री किशोरीलाल कोठारी
उपाध्यक्ष	:	श्री गिरधारीलाल चोरड़िया
		श्री लक्ष्मीपत चोरड़िया
मंत्री	:	श्री रमेश कुमार सुराणा
सहमंत्री	:	श्री कनक कुमार दुगड़
		श्री संदीप कुमार बैद
कोषाध्यक्ष	:	श्री नेमीचन्द दुगड़

उकलाना मंडी

अध्यक्ष	:	श्री रामबाबू जैन
उपाध्यक्ष	:	श्री सुभाष जैन
मंत्री	:	श्री योगेश जैन
सहमंत्री	:	श्री प्रमोद जैन
कोषाध्यक्ष	:	श्री प्रमोद जैन

गजपुर

अध्यक्ष	:	श्री पूनमचन्द कोठारी
उपाध्यक्ष	:	श्री शान्तिलाल सोलंकी
		श्री गणपतलाल एस. कोठारी
मंत्री	:	श्री मनोहरलाल आई. सोलंकी
सहमंत्री	:	श्री रमेश एम. कोठारी
		श्री मनोहर बी. कोठारी
कोषाध्यक्ष	:	श्री मांगीलाल सोलंकी

चित्तौड़गढ़

अध्यक्ष	:	श्री गौतम कुमार पोखरना
उपाध्यक्ष	:	श्री अशोक श्रीश्रीमाल
मंत्री	:	श्री अजित ढीलीवाल
सहमंत्री	:	श्री किशन पिछोलिया
		श्री रजनीश खाब्या
		श्री सुनील ढ़ीलीवाल
कोषाध्यक्ष	:	श्री बाबूलाल पीतलिया

कालियाचक

अध्यक्ष	:	श्री रतनलाल हिंगड़
उपाध्यक्ष	:	श्री सुपारसमल सुराणा
		श्री रतनलाल मालू
मंत्री	:	श्री ताराशंकर सुराणा
सहमंत्री	:	श्री बाबूलाल हींगड़
कोषाध्यक्ष	:	श्री छतरसिंह बोथरा

मालाड़

अध्यक्ष	:	श्री रोशनलाल डागल्या
उपाध्यक्ष	:	श्री किशनलाल आर. मादरेचा
		श्री शंकरलाल वी. धाकड़
		श्री इन्द्रमल एस. कच्छारा
		श्री अशोक कुमार जी. बाफना
मंत्री	:	श्री राजेन्द्र कुमार बी. मुथा
सहमंत्री	:	श्री ललित कुमार डी. बाफना
कोषाध्यक्ष	:	श्री गणेशलाल एन. कोठारी

पालघर

अध्यक्ष	:	श्री भगवानलाल सिंघवी
उपाध्यक्ष	:	श्री लक्ष्मीलाल राठौड़
मंत्री	:	श्री ख्यालीलाल बदामिया
कोषाध्यक्ष	:	श्री नन्दलाल बाफना

इस्लामपुर

अध्यक्ष	:	श्री हंसराज सिंघी
उपाध्यक्ष	:	श्री पवन भण्डारी
मंत्री	:	श्री नरेन्द्र बैद
कोषाध्यक्ष	:	श्री सुशील सिसोदिया

गौरीपुर

अध्यक्ष	:	श्री विजय सिंह चौरड़िया
उपाध्यक्ष	:	श्री नोरतन बैद
		श्री विजय सिंह बैद
मंत्री	:	श्री गुलाबचन्द नाहर
सहमंत्री	:	श्री दिलीप कुमार चोरड़िया
कोषाध्यक्ष	:	श्री बाबूलाल चोरड़िया

नव-निर्वाचन

मोमासर

अध्यक्ष : श्री नोरतनमल संचेती
मंत्री : श्री शान्तिलाल सेठिया
सहमंत्री : श्री धनपत सिंह संचेती
कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र कुमार संचेती

मरोली

अध्यक्ष : श्री सम्पतमल कोठारी
मंत्री : श्री दिनेश कुमार पीतलिया
कोषाध्यक्ष : श्री कान्तीलाल बंबकी

लोणार

अध्यक्ष : श्री सुरेशचन्द कचरुलाल दुगड़
उपाध्यक्ष : श्री अनिल कुमार उत्तमचन्द चोरड़िया
श्री विजय प्रेमचन्द कोचर
मंत्री : श्री विनोद कुमार सुगनचन्द जोगड
सहमंत्री : श्री कांतीलाल सुवालाल जोगड
कोषाध्यक्ष : श्री शान्तिलाल रतनलाल जोगड

काठमांडू

अध्यक्ष : श्री दिनेश कुमार नौलखा
उपाध्यक्ष : श्री श्रीचन्द जैन
श्रीमती समता भूतोड़िया
मंत्री : श्री राजेन्द्र चौरड़िया
सहमंत्री : श्री अशोक बोथरा
कोषाध्यक्ष : श्री राजेश रामपुरिया

खुश्कीबाग

अध्यक्ष : श्री मूलचन्द भंसाली
उपाध्यक्ष : श्री धनपत रांका
श्री नरेन्द्र कोठारी
मंत्री : श्री हंसराज दुगड़
सहमंत्री : श्री सुशील बैद
कोषाध्यक्ष : श्री विजय सेठिया

बोरज

अध्यक्ष : श्री बाबूलाल ढ़ीलीवाल
उपाध्यक्ष : श्री रमेशचन्द्र गुन्देचा
मंत्री : श्री लालचन्द परमार
कोषाध्यक्ष : श्री घेवरमल परमार

मेघरज

अध्यक्ष : श्री लादुलाल माण्डोत
उपाध्यक्ष : श्री शान्तिलाल सकलेचा
मंत्री : श्री बाबुलाल गांधी
सहमंत्री : श्री दीपचन्द भंसाली
कोषाध्यक्ष : श्री दिनेश कुमार गांधी

नाभा

अध्यक्ष : श्री अशोक जिन्दल
उपाध्यक्ष : श्री बुधराम सिंगला
मंत्री : श्री रमेश कुमार सिंगला
सहमंत्री : श्री राजेश गुप्ता
: श्री अशोक अजनोडेवाला
कोषाध्यक्ष : श्री राजीव बंसल

चिताम्बा

अध्यक्ष : श्री नेमीचन्द मांडोत
उपाध्यक्ष : श्री रोशनलाल सामरा
मंत्री : श्री महावीर कुमार भटेवरा
सहमंत्री : श्री राहुल कुमार दक
कोषाध्यक्ष : श्री ख्यालीलाल सामरा

गुरु कृपा व अनुशासन में फलते
सेवा के आश्वासन का अभिनन्दन...

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी घोष

जन जन में जागे विश्वास
संयम से - व्यक्तित्व विकास

- आचार्य महाश्रमण

- **इस बार हम आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष में यहां आए हैं। इस वर्ष के उपलक्ष्य में सौ मुनि दीक्षाओं की कल्पना हमने कर रखी है। महाव्रती बनाने के क्रम में हमने बीदासर को मुख्य रूप से चुना। इस वर्ष के आयोजन हेतु चार चरण पूर्व में हमने निर्धारित कर दिए। आज मैं आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी का महाचरण बीदासर को दे रहा हूं। इन चार चरणों के ऊपर महाचरण रहेगा, क्योंकि प्रायोगिक आयोजन तो यहां हो रहा है। अन्य चार चरणों में तो स्तुति आदि का उपक्रम है, किन्तु यह तो प्रायोगिक आयोजन है। इसलिए बृहत् दीक्षा समारोह आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के 'महाचरण' के रूप में रहेगा।**
- शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी लाडनूं में थे। इस वर्ष मानो कि हम इनके मेहमान बनकर आए हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी की इन्होंने सेवा की है, साहित्य कार्य में संलग्न हैं। ये चिंतनशील और काम करने वाले संत हैं। इनके स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी कठिनाई रही, उसे पार करना है। युवा संत हैं, अभी इनको घूमना है। स्वास्थ्य अच्छा रहे और अच्छा काम चले।
- सुजानगढ़ में चातुर्मास करने वाली साध्वी निर्वाणश्रीजी के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा–'अभी साध्वियों ने अनेक रागों में अपने भावों को प्रस्तुति दी। इसे सुनकर मुझे परमपूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित 'माणक महिमा' जैसे ग्रंथों की स्मृति हो आई। सिलीगुड़ी चातुर्मास संपन्न कर साध्वियां लंबी दूरी तय कर यहां पहुंच गईं। थकान भी नहीं उतरी होगी, मैंने उसी दिन इनका चातुर्मास सुजानगढ़ घोषित कर दिया। यह तो साध्वियों का शुभयोग कहें कि बीच में कई बार वे लाडनूं भी आती रहीं। सभी अपना खूब अच्छा विकास करें।
- सुजानगढ़ के वर्तमान श्रावकों में देखूं तो मांगीलालजी सेठिया पर गुरुदेव तुलसी की कितनी कृपा थी। गुरुदेव ने इन्हें 'अजातशत्रु' के रूप में संबोधित किया था। गुरुदेव जब दिल्ली पधारते थे तो मेरे देखने में बहुधा प्रवास व्यवस्था समिति का संयोजकीय दायित्व मांगीलालजी संभालते थे। तेरापंथ विकास परिषद् के संयोजक के रूप में भी इन्होंने अपनी सेवाएं दीं।
- ताराचन्दजी रामपुरिया श्रीचन्दजी के पुत्र हैं। गुरुदेव तुलसी के समय तो संस्थागत कार्यों में इनका समावेश हुआ या नहीं, किन्तु बाद में मैंने देखा, जैविभा और मान्य विश्वविद्यालय के साथ इनका कितना जुड़ाव रहा है। वर्तमान में ये जैविभा के अध्यक्ष हैं और लाडनूं ही रहने लग गए हैं तो अच्छी सार-संभाल का अवसर मिल जाता है।
- हीरालालजी मालू का गुरुदेव तुलसी के युग में तो इतना संपर्क नहीं रहा होगा, किन्तु अभी ये तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष हैं। आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसके संयोजक के रूप में कितना बड़ा दायित्व निभा रहे हैं।
- साध्वी विवेकश्रीजी और साध्वी मनीषाश्रीजी चाड़वास की हैं। दोनों कई वर्षों से गुरुकुलवास में हैं। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए खूब अच्छा विकास करें, खूब सेवा करें।
- सामान्यतया तीन चाकरी का संघीय विधान है, किन्तु चलाकर चौथी चाकरी स्वीकार की है। कमलकुमारजी स्वामी सेवा में काफी हड़ीप हैं। पंजाब में इन्होंने कितने ही (जैनेत्तर) लोगों को गुरुधारणा करवाई, यह विशेष बात है। इनमें तेरापंथ के प्रति लगन है। पहले दूर-दूर तक यात्राएं की हैं। तपस्या तो करते ही रहते हैं। खूब अच्छा काम करते रहें।
- शासनश्री मुनि राकेशकुमारजी स्वामी हमारे प्रौढ़ मुनि हैं। 'अणुव्रत प्राध्यापक' अलंकरण यह द्योतित कर रहा है कि आप अणुव्रत से कितनी अभिन्नता से जुड़े हुए हैं। आपकी अपनी विद्वत्ता और प्रबुद्धता है। आप स्वभाव से सौम्य प्रतीत होते हैं।
- पदमचन्दजी पटावरी को जैन विश्वभारती व सेखानी ट्रस्ट की ओर से 'संघसेवा पुरस्कार' दिया गया। पटावरीजी संघसेवा में निकटता व सघनता से जुड़े हुए हैं। आचार्य तुलसी का तो इन पर कितना अनुग्रह रहा है। पटावरीजी संघसेवा कार्य में गहराई से जुड़े रहें।
- अभी ललितजी को अणुव्रत लेखक पुरस्कार दिया गया। इनके पिता रामस्वरूपजी को मैंने बड़े भक्त व्यक्ति और अच्छे कार्यकर्ता के रूप में देखा। ललितजी भी तेरापंथ से जुड़े हुए हैं। लेखन आदि के माध्यम से अपनी पवित्र सेवाएं देते रहें।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
Jain Swetambar Terapanthi Mahasabha
(ISO 9001 : 2008 Certified Organisation)
3, Portuguese Church Street, Kolkata - 700 001.
Phone : 033-22357956, 22343598, Fax : 033-22343666., e-mail : info@jstmahasabha.org

President's Office :
C/o. Maloo Constructions , # A-204/205, 2nd Floor, 25/26, Brigade Majestic, 1st Main, Gandhinagar, Bangalore - 560 009.
Phone : 080-2226 5737, Fax : 080-2226 4530, e-mail : hiralal.maloo@gmail.com

Printed at : श्री Offset Printers. Ph. : 080-6599 2695 Mob.: 98440 06655